शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 24 | उदयपुर रविवार 01 जनवरी 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

डिग्री विहीन डिग्रियों से अलंकृत

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

शेखावतजी का यह सौभाग्य रहा कि जीवनभर वे हस्तलिखित ग्रंथों, बहियों, रूक्कों, पानड़ों, प्राचीन लेखों आदि की शोध-खोज में अपना हर क्षण बांधे रहे। स्वयं डिग्री विहीन होकर कइयों को डिग्रियों का अलंकरण दिलाते रहे। मित्रों के बीच उनकी आत्मीयता में कभी कोई उतार नहीं देखा गया। शोध और साहित्य में अपयश फैलाने वाली सभी बातों से उनकी सख्त नाराजगी रही। यहां तक कि वे यश देने वाले रास्तों पर भी बड़ी सावधानी से फूंक-फूंक कर ही अपने डग भरते।

श्री सौभाग्यसिंह शेखावत राजस्थानी भाषा और साहित्य के ऐसे मौन तपस्वी थे जो विगत आठ दशक से अपनी कलम के धनी बने हुए थे। अपने लेखन द्वारा उन्होंने जो विपुल सामग्री प्रकाशित कराई उससे शोध के कई नये आयाम खुले हैं। इतिहास को पूंजीगत सामग्री हाथ लगी है और भाषा का भंडारण समृद्ध हुआ है। वे राजस्थानी के ऐसे रत्नाकर थे जिसकी नदियां बारहों मास बहती हुई खोज की अनगिनत पगडंडियां नापती थीं।

शेखावतजी का यह सौभाग्य रहा कि जीवनभर वे हस्तलिखित ग्रंथों, बहियों, रूक्कों, पानड़ों, प्राचीन लेखों आदि की शोध-खोज में अपना हर क्षण बांधे रहे। स्वयं डिग्री विहीन होकर कइयों को डिग्रियों का अलंकरण दिलाते रहे और स्वयं उनके अलंकरण भी बनते रहे। डिंगल जो आज बड़ी क्लिष्ट भाषा समझी जाती है, उसके शेखावतजी सर्वाधिक प्रामाणिक जानकार विद्वान थे। उनका लेखन मात्र जानकारी का संकलन नहीं, उसका प्राणतत्व और पर्यालोचनीय विश्लेषण भी देता और परम्परा की पृष्ठभूमि लिए शोध, समझ और सोच की वह दृष्टि भी देता जो साहित्य की सृजनशीलता की रचना में महत्वपूर्ण भूमिका लिए है।

शोखावतजी से मेरा परिचय उदयपुर के साहित्य संस्थान में हुआ। जब कविराव मोहनसिंह पृथ्वीराज रासो के शब्दकोश में खोए हुए थे। शेखावतजी तब अपने पहनावे में भी अधिक नये नहीं थे। धोती, लम्बी बाहों का कमीज और नुकीली मूंछों में वे बड़े स्फूर्तिवान और तेजस्वी बने रहे। मित्रों के बीच उनकी आत्मीयता में कभी कोई उतार नहीं देखा गया। जब वे यहां से राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी चले गये तब तो उनसे एक तरह से स्थायी पारिवारिक सम्पर्क ही हो गया जो बंटी हुई रस्सी की तरह अधिक बलिष्ठ ही बनता गया।

शेखावतजी का लेखन बहुविध रहा। राजस्थानी वातां, राजस्थानी लोकगीत और राजस्थानी पड़ूत्तर पर जहां उन्होंने पुस्तकें लिखीं वहां राजस्थानी वीर गीतों के चार भाग तथा कहवाट बिलास, बांकीदास ग्रंथावली, जाड़ा मेहडू ग्रंथावली और बिन्है रासो लिखकर इस साहित्य की बड़ी महत्वपूर्ण सेवा की। बलवंत विलास, पूजां पांव कविसरां, जीणमाता जैसी उनकी और कई कृतियां हैं। राजस्थानी साहित्य सम्पदा में उनके लिखे महत्वपूर्ण लेख संकलित हैं जो विविध विधाओं, रचनाकारों तथा विशिष्ट रचनाकृतियों पर विशद प्रामाणिक और पुख्ती जानकारी लिए हैं।

उन्होंने लोकसाहित्य विषयक रचनाएं भी खूब लिखी हैं। बहुत सारी जानकारी मुझे उन्होंने ऐसी भेजी जिसके आधार पर मैंने अपने लेखन को अधिक पुष्ट और प्राणवान बनाया। किसी भी विषय पर उनकी सम्मति बड़ी ठोस आधार और गहरी पकड़ लिए रहती। जो बात उनकी जानकारी से परे होती, उसके लिए वे अपना एक क्षण भी फालतू जाया नहीं करते। जरूरी होता तो उसकी शोध में रहते अन्यथा तत्काल स्पष्ट होकर निश्चिंत हो जाते। अपने विषय की जानकारी के लिए वे बहुत सजग रहते पर अपने मित्रों से सम्बन्धित भी यदि कोई जानकारी उन्हें हाथ लगती तो वे उसका भी लेखाजोखा रखते और उसे सही हाथों में पहुंचाते।

शोध और साहित्य में अपयश फैलाने वाली सभी बातों से उनकी सख्त नाराजगी रही। यहां तक कि वे यश देने वाले रास्तों पर भी बड़ी सावधानी से फूंक-फूंक कर ही अपने डग भरते। वादविवाद से बचते हुए मैंने उनको कई महत्वपूर्ण जगहों से अपना किनारा करते हुए देखा है और ऐसे कई लोगों को सशक्त किनारा देकर उन्हें मझधार में लड़खड़ाने से भी बचाया। अब उन जैसे लोग कुछ ही हैं जो अपनी संपूर्ण ईमानदारी और ऊर्जा से राजस्थानी के अमूल्य प्राचीन को आधुनिकता के साथ जोड़ने के लिए मन-प्राण को आत्मस्थ किये हुए हैं।

प्राच्यविद्या के प्रखर चितेरे

-डॉ. देव कोठारी-

उनके स्नेहसिक्त व्यवहार को पाकर मैं सदा-सदा के लिये उनका आत्मीय बन गया जो धीरे-धीरे प्रगाढ़ता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचता गया। उन्होंने प्राच्यविद्या के क्षेत्र को ही अपनी लेखनी से उपकृत नहीं किया अपितु सर्जनात्मक साहित्य-लेखन को भी समृद्ध किया। गद्य व पद्य दोनों विधाओं के वे सिद्धहस्त लेखक थे। मैंने सौभाग्यजी को भूत, वर्तमान और भविष्य के चितेरा के रूप में देखा। बहुआयामी प्रतिभा से परिपूर्ण और आत्मीयता से सरोबार वे अब हमारे मध्य नहीं हैं।

प्राच्यविद्या के प्रखर चितेरे श्री सौभाग्यसिंह शेखावत से मेरा लगभग पांच दशाब्द से सतत सम्पर्क रहा। उनके सहज सौम्य व्यक्तित्व, शुद्ध प्रबुद्ध विचार, स्नेह से परिपूर्ण मैत्री मूलक व्यवहार, अतुल विस्तृत वैदुष्य से युक्त रस-स्निग्ध लेखनी का मैं चश्मदीद गवाह रहा।

उनका अनुभवजन्य चिन्तन, गहन मनन, सुविचारित और स्पष्ट सारस्वत साधना मेरी प्रेरणा के अमूल्य स्रोत रहे। राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति व इतिहास के अनुरागी, प्राचीन व दुरूह पाण्डुलिपियों के शोधक-सम्पादक और अधिकृत मनीषी परम्परा के मानसपुत्र के रूप में वे साहित्यसेवियों के लिये सदा वन्दनीय रहे।

सन् 1969 में मैंने राजस्थानी साहित्य (वि. सं. 1650-1750) विषय पर पी-एच.डी. हेतु शोधकार्य आरंभ किया। शोधकार्य के संदर्भ में राजस्थानी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज हेतु राजस्थान के विभिन्न अंचलों का भ्रमण करना पड़ा। इसी क्रम में जोधपुर स्थित चौपासनी भी जाना हुआ। वहां शेखावतजी राजस्थानी शोध संस्थान में कार्यरत थे। मैंने अपना परिचय देते हुए साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ में कार्यरत होना बताया। साहित्य संस्थान का नाम लेते ही उन्होंने चौपासनी में मेरे हर कार्य को सहज, सरल व सुलभ करा दिया। मेरे संकोचजन्य स्वभाव को अनुभव कर वे मुझे बहुत आग्रह के साथ उनके निवास पर ले गये। मैं बैठा ही था कि मेरे सामने भोजन का थाल आ गया। उन्होंने जिस आत्मीयता एवं मनुहार से मुझे भोजन कराया, वह दृश्य आज भी मेरी आंखों में उभर आता है। उनके इस स्नेहसिक्त व्यवहार को पाकर मैं सदा-सदा के लिये उनका आत्मीय बन गया जो धीरे-धीरे प्रगाढ़ता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचता गया।

वाकया अस्सी के दशक का है। प्रात:काल भ्रमण कर घर लौटा ही था कि एक व्यक्ति ने मेरे घर का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खोला तो एक अधेड़ व्यक्ति उदास मुद्रा में दरवाजे पर खड़ा था। सकुचाते हुए उस व्यक्ति ने कहा, मुझे कोठारीजी से मिलना है। मैं बोला, बोलो मैं ही हूं। दु:ख भरे स्वर में उस व्यक्ति ने बताया, सौभाग्यजी आप को याद कर रहे हैं। मैंने कहा- कौन सौभाग्यजी? उसने बताया कि वे कल ही जोधपुर से उदयपुर आये। मेरे घर पर ही उनका रूकना हुआ, लेकिन रात्रि को उनके सीने में जोर का दर्द उठा, मैं उन्हें सरकारी अस्पताल ले गया। डाक्टर ने हार्ट अटेक बताया। वे आई.सी.यू. में भर्ती हैं। यह सुनते ही मैं विस्मित और किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। विश्वास नहीं हुआ, लेकिन जैसा था, वैसा ही चल पड़ा साईकल पर हॉस्पिटल की ओर।

आई.सी.यू. में वे बोलने की स्थिति में नहीं थे। आक्सीजन चढ़ रही थी। डाक्टर का आग्रह था, उनके परिवार को सूचना देना। मैंने राजस्थानी शोध संस्थान के निदेशक डॉ. नारायणसिंह भाटी से बात की। दूसरे ही दिन शेखावतजी का छोटा पुत्र महावीरसिंह उदयपुर आ गया। वे तेरह दिन अस्पताल में रहे।

शेखावतजी को भैरोसिंहजी शेखावत ने अपने मुख्यमंत्रित्व काल में राजस्थानी भाषा साहित्य व संस्कृति अकादमी बीकानेर का अध्यक्ष नियुक्त किया तब उन्होंने मुझे अकादमी की कार्यकारिणी में सम्मिलित किया। यही नहीं, जब सरकार ने राजस्थानी भाषा के विकास व संवैधानिक मान्यता के संदर्भ में सौभाग्यजी के नेतृत्व में पांच सदस्यीय समिति का गठन किया तो उसमें भी एक सदस्य के रूप में मुझे लिया गया। उस दौरान उनके सहृदयतापूर्ण सौमनस्य का जो सरोकार उपलब्ध हुआ वह मेरे जीवन में मील के पत्थर के रूप में स्मृति-पटल पर अंकित हो गया।

8 दिसम्बर 2016 को उनके निधन से दो दिन पूर्व जब डॉ. कल्याणसिंह शेखावत सौभाग्यसिंहजी से मिलने भगतपुरा उनके निवास पर पहुंचे उस समय भी उन्होंने मुझे याद किया। कल्याणसिंहजी ने फोन पर विशद सूचना दी तो मैं संकल्पित हुआ कि अब जब भी जयपुर जाऊं गा, भगतपुरा (सीकर) जाकर जरूर उनके दर्शन करूंगा लेकिन दुर्भाग्य ने मुझे अवसर नहीं दिया और 10 दिसम्बर 2016 को प्रात: 6 बजे वे हम सबसे विदा हो गये।

मेरे मन की बात मन में ही रह गई। वे जिनके भी सम्पर्क में रहे, उनके साथ उनकी आत्मीयता सदैव बनी रही। उन्होंने राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति तथा इतिहास की साधना में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। उनके समकालीन डॉ. दशरथ शर्मा, डॉ. रघुबीरसिंह, डॉ. गोपीनाथ शर्मा, अगरचन्द नाहटा, नरोत्तम स्वामी, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, डॉ. मनोहर शर्मा प्रभृति विद्वान उनकी मनीषा से सदा प्रभावित रहे।

ऐसे सृजनधर्मी सौभाग्यजी की अब तक 49 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और 16 पुस्तकें अभी प्रकाशनाधीन हैं। वे अनेक पुरस्कारों व सम्मानों से नामित हुए तथा कई संस्थाओं से जुड़े रहे। उन्होंने प्राच्यविद्या के क्षेत्र को ही अपनी लेखनी से उपकृत नहीं किया अपितु सर्जनात्मक साहित्य-लेखन को भी समृद्ध किया। गद्य व पद्य दोनों विधाओं के वे सिद्धहस्त लेखक थे।

मैंने सौभाग्यजी को भूत, वर्तमान और भविष्य के चितेरा के रूप में देखा। बहुआयामी प्रतिभा से परिपूर्ण और आत्मीयता से सरोबार वे अब हमारे मध्य नहीं हैं। ऐसे महामना को मेरी अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि।

स्मृतियों के शिखर (23) : डॉ. महेन्द्र भानावत

रसवंती कलाओं के कीर्ति-कौस्तुभ डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

कुछ लोग होते हैं जो ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में गहरी दखल रखते हैं तो कुछ लोग अन्यान्य क्षेत्रों में निष्णात होते हुए भी किसी एक क्षेत्र को ही अपना कर्म-क्षेत्र बनाते हुए गहन बने रहते हैं। डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने सर्वाधिक ख्याति तो भारतीय संविधान के गहनतम अध्येता तथा विधिवेत्ता के ही रूप में अर्जित की किन्तु अन्य क्षेत्रों में भी उनकी पहुंच बराबर बनी रही। वे अच्छे विचारक, कवि, लेखक तथा कला-संस्कृति के संस्कारवान समायोजक थे। राजनीति में भी पूरा पड़ाव लिये थे। स्वभाव से वे बड़े मिलनसार, मृदुभाषी और मोहित मन वाले थे। सच में वे रसवंती कलाओं के कीर्ति-कौस्तुभ ही थे।

डॉ. सिंघवी से कब मेरा मिलना हुआ, ठीक से याद नहीं पर लेखन के कारण हम एक-दूसरे से परिचित छठे दशक में हो गये थे। माध्यम था कलकत्ता से प्रकाशित होने वाला 'विशाल राजस्थान'। इसमें मैं निरंतर लिखता-छपता था और जिन अन्यों को मैं इसमें पढ़ता रहा उनमें रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, भंवरमल सिंघवी तथा डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी प्रमुख थे।

डॉ. सिंघवीजी से गहरे रूप में जुड़ाव हुआ जब वे भारतीय लोककला मण्डल के अध्यक्ष बनाये गये। सन् 1952 से कलामंडल के अध्यक्ष पद को शोभित करने वालों में आर.आर. दिवाकर, बी. गोपाल रेड्डी, डॉ. वी.वी. केसकर, पृथ्वीराज कपूर और मोहनलाल सुखाड़िया रहे। सुखाड़ियाजी के निधन के बाद डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी अध्यक्ष बनाये गये। अब तक जो अध्यक्ष रहे उनमें कपूर को छोड़ सभी राजनीतिज्ञ थे। डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी को अध्यक्ष बनाने के पीछे यही मंशा रही कि राजस्थान की रसवंती कला-संस्कृति के प्रति उनकी गहरी दिलचस्पी के साथ-साथ उसकी श्रेष्ठ परंपरा को देश-विदेश तक संवर्धित करने में उनका योगदान मिलेगा साथ ही कलामंडल की अब तक चली आ रही गतिविधियां उनसे संबल पाकर और अधिक प्राणवंत बनेगीं। राजस्थान के निवासी होने के कारण सिंघवीजी हमारे नजदीक रहेंगे और हर समय उनसे सलाह-मशविरा करने में सुविधा रहेगी।

कलामंडल के संस्थापक देवीलाल सामर का निधन 3 दिसम्बर 1981 को हो गया। उनके देहावसान पर डॉ. सिंघवी ने मुझे शोकगीत लिख भेजा। पत्र में उन्होंने लिखा कि इतना शीघ्र, यह सब कैसे हो गया, सूचित करें। गीत के लिए लिखा कि उनके पार्थिव देह के दाह-संस्कार, 4 दिसम्बर 1981 को इसकी रचना की गई। मैंने अपने संपादन में कलामंडल से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र 'रंगायन' में इसे प्रकाशित किया। रंगायन का जनवरी-फरवरी 1982 का अंक देवीलाल सामर श्रद्धांजलि अंक के रूप में प्रकाशित किया गया था। इस अंक में सबसे पहले यही गीत छापा गया जो इस प्रकार है-

देवदूत भेजा था विधि ने,
लोककला को मंडित करने।
वरदा सरस्वती ने भेजा,
युग की जड़ता खंडित करने।।
जन जीवन में, जनमानस में,
रूप और रंगों की छवि भर।
संस्कृति के दर्पण में उसने,
स्वप्न हमारे किये उजागर।।
मित्र, मार्गदर्शक, निर्देशक,
अभिनेता तुम, सूत्रधार भी।
द्रष्टा भी थे, स्रष्टा भी थे,
तुम शिल्पी भी, वास्तुकार भी।।
सूना लोककला का प्रांगण,
हमप्रभ, निष्प्रभ, मित्र तुम्हारे।
अंकित हृदय पटल पर सबके,
यश गाथा के चित्र तुम्हारे।।
शोक श्लोक बन जाय बंधुवर,
मृत्यु सृजन से बाजी हारे।
मूर्तरूप लें सदा मनोरम,
स्वप्न और संकल्प तुम्हारे।।

जब सामरजी की आदमकद प्रतिमा कलामंडल परिसर में स्थापित करने का निर्णय लिया गया तब सिंघवीजी ने मुझे इस गीत को किसी उचित जगह प्रतिमा के वहां देने को लिखा। गीत बड़ा होने के कारण कलामंडल की कार्यकारिणी ने प्रतिमा के पीछे की चारदीवारी पर इसे उत्कीर्ण करवा दिया। सामरजी के निधन के बाद ही यहां के प्रबुद्धजनों, समाजसेवियों और संस्था-संचालकों को यह आभास होने लग गया था कि कहीं ऐसा न हो कि कलामंडल में संकीर्ण और अशालीन राजनीति प्रवेश कर जाए और यहां की जो कला-सांस्कृतिक गतिविधियां प्रभावी रूप से चल रही हैं उनमें टूटन तथा बिखराव आ जाए। यह सोच कुछ प्रभावी व्यक्तियों ने मिलकर डॉ. सिंघवी को पत्र लिखा-

उदयपुर
17 दिसम्बर 1981

आदरणीय भाई सा. डॉ. सिंघवीजी,

हम आपके साथ स्वर्गीय भाई देवीलालजी सामर की मृत्यु में शोकग्रस्त हैं और ऐसी रिक्तता का अनुभव करते हैं कि उसकी पूर्ति शायद संभव नहीं है। देवजी कोई फुर्सत के समय संस्कृति के श्रीवर्धक नहीं थे। वे लोकसंस्कृति के लिए समर्पित साथियों में से थे। वे इस देश की संस्कृति को लोकमंगल के साथ और जन के साथ जोड़ने वाले विचारकों में से हैं। हमारा विश्वास है कि ज्यों-ज्यों समय बीतता जाएगा, देवजी की स्मृति हम सबको उनके अधूरे काम पूरा करने का उत्साह देगी।

लोककला मण्डल का यह सौभाग्य और देवजी की अन्तर्दृष्टि है कि उन्होंने विश्रुत कलाधार्मियों के साथ-साथ कलामर्मज्ञ विद्वानों को भी अपने साथ जुड़ा रखा और उन्हें लोककला के बुनियादी सिद्धांत को परखने की दीक्षा दी। उन साथियों ने आजीवन उनके मार्गदर्शन में काम करने का संकल्प लिया और आज भी वे अदम्य उत्साह तथा लगन से श्री सामरजी का काम कर रहे हैं। इस समय आप जैसे मेधावी व्यक्ति इसके अध्यक्ष हैं इसलिए हमें आशा है कि स्वार्थकामी लोग अपने हाथ-पैर नहीं फैलायेंगे और ईमानदार, सच्चे और विद्वान आदर पायेंगे। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आपके पास समय हो तो बातचीत करने का अवसर दें। लोककला मंडल से हम उसकी रचनाशीलता के कारण जुड़े हैं। अन्यथा न लें।

आपके

(1) जनार्दनराय नागर (2) भवानीशंकर उपाध्याय (3) नंद चतुर्वेदी (4) प्रकाश आतुर (5) ब्रिजमोहन गोयल

उत्तर में दिसंबर 25, 1981 को सिंघवीजी ने मुझे लिखा-

कमलालय
बी-8, साउथ एक्सटेंशन
नई दिल्ली-110049

प्रियवर डॉ. भानावत,

आपसे उस दिन विशेष बात नहीं हो पाई। इस बीच श्री नंद चतुर्वेदीजी एवं अन्य हस्ताक्षरों सहित एक पत्र मिला। वह पत्र पहले मिला होता तो उदयपुर में मैं अधिक स्पष्ट बात कर पाता। लगता है, कहीं गलतफहमियों के अंकुर हैं। सदायशता के साथ उन्हें दूर करना चाहिए। मैं आपसे विस्तार से बात करना चाहूंगा।

लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

इस बीच मैंने अपने निज की एक पुस्तक 'अजूबा राजस्थान' तैयार की तब विचार बना कि क्यों न इसकी भूमिका डॉ. सिंघवीजी से ही लिखवा ली जाए। जब मैंने इसका जिक्र किया तो उन्होंने सहर्ष इसके लिए अपनी स्वीकृति प्रदान की और कुछ ही दिनों में भूमिका लिख भेज दी। बाद में इस पर मुझे उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा पं. रामानंद त्रिपाठी नामित पुरस्कार प्रदान किया गया।

अजूबा राजस्थान की भूमिका में डॉ. सिंघवी ने लिखा-

डॉ. महेन्द्र भानावत को राजस्थान की लोकपरंपराओं के अध्येता और व्याख्याता के रूप में उल्लेखनीय प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। पुस्तक उनकी उपलधिब्यों की यात्रा में एक और अध्याय जोड़ती है। डॉ. भानावत ने हमारे देश के गौरव, लोककलाओं के अद्वितीय मर्मज्ञ, स्वर्गीय देवीलाल सामर के पदचिन्हों पर चलकर जनमानस की मान्यताओं और जीवंत अभिव्यक्तियों के परिप्रेक्ष्य में लीक से हट 'लोक' की साधना का प्रयास किया है। इस साधना में उन्होंने न केवल अथक अध्यवसाय का परिचय दिया है बल्कि परंपरा और मान्यता की जड़ तक पहुंचने की क्षमता अर्जित की है।

'अजूबा राजस्थान' वास्तव में राजस्थानी जनजीवन के कुछ अंचलों का एक अनोखा वृतांत है जो यह सिद्ध करता है कि कभी-कभी वास्तविकता के तथ्य किसी भी कपोल कल्पना से अधिक आश्चर्यजनक हो सकते हैं। डॉ. भानावत ने कई विचित्र रीतियों, परंपराओं और प्रचलनों को एक सचित्र संकलन में सजाकर व्यापक दृष्टि दी है और 'लोक' के जीवंत यथार्थ को समानुभूति तथा सहानुभूति दी है। उदयपुर क्षेत्र में डॉ. भानावत की नवरात्रा यात्रा में संकलित तथ्य अजूबा की माला के मनकों की तरह अलग-अलग होते हुए भी मूलभूत रूप से एक धागे में पिरोये हुए हैं। यात्रा के हर कदम पर कथाओं का अबाध क्रम है और जनकथाओं के विचित्र कथ्य समाए हुए विश्वासों के बिम्ब, कथावाचक की बात में रस है और शैली में सुगम सुघड़ साहित्यिकता की बानगी और रवानगी।

इस यात्रा वृत्तांत की यह विशेषता है कि इसके प्रत्येक पृष्ठ में लोकजीवन की धरती की सौंधी सुगंध सन्निहित है। इसमें लोकभाषा के मुहावरों की प्रतिध्वनि अनुगूंजित होती है और पाठक बरबस इन अजूबों की दुनिया में प्रविष्ट हुए बिना नहीं रह सकता। इस यात्रा का वृत्तांत पढ़ते-बतियाते थोड़ी सी देर में पाठक अनायास ही साक्षी और सहयात्री की अनुभूति का आस्वादन करने लगता है। जब-तब लोकदेवता कल्लाजी की रहस्यमयी संकेतात्मक उपस्थिति पाठक को सचेतन मूर्च्छा का आयाम देते हुए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष के बीच एवं समय के पार ले जाती प्रतीत होती है।

'अजूबा राजस्थान' मात्र एक रोचक यात्रा-वृत्तांत ही नहीं है। इसे किस्सागोई कहना असंगत होगा। इस पुस्तक में अनुसंधान, साहित्य रिपोर्ताज, समाजशास्त्र एवं सामाजिक नेतृत्व का सम्मिश्रित समावेश हुआ है जिसे एक नई विधा की सौष्ठवपूर्ण प्रस्तुति के लिए लेखक को पाठकों की ओर से और मेरी अपनी ओर से हार्दिक बधाई एवं इस विधा की संभावनाओं का स्वागत।

सिंघवीजी को मैंने कलामंडल के बारे में कुछ भी नहीं बताया किंतु बहुत सारी बातें हवा कह देती है। उसे हर व्यक्ति नहीं सुन सकता किंतु जिन्हें सुनना समझना सुगंध लेना होता है वे सब कुछ समझ सुन गंध ले ही लेते हैं। इसका संकेत मुझे उनके द्वारा लिखे 14 सितंबर 1988 के पत्र से मिला। उन्होंने लिखा-

मेरे लिए यह अवसाद का कारण है कि इस देश में अधिकांश स्वयंसेवी संस्थाओं में सौहार्द और सौमनस्य का अकाल है और अभियोग और असंतोष की विभीषिका बढ़ती चली जा रही है। मैंने तो इस वर्ष अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देने का निश्चय कर लिया था किंतु वहां जाकर लगा कि यह कोई समाधान नहीं है। दायित्व सबका होता है-अच्छे में भी और बुरे में भी।

क्यों ऐसा होता है कि हम भारतवासी साथ मिलजुलकर काम नहीं कर पाते? संस्था में निष्ठा, अनुशासन और पारस्परिकता के बिना कोई सुनहला भविष्य नहीं हो सकता। फिर भी क्यों नहीं, सब मिलकर प्रतिबद्ध और सन्नद्ध होते कि संस्था का मार्ग प्रशस्त हो? क्यों नहीं कोई राह निकलने की चेष्टा की जाती है? आपेक्षों की बौछार देखता हूं, सद्भावना की फुहार नहीं दिखाई देती। मेरे लिए यह बहुत खेद का विषय है। आपके रचनात्मक सुझावों की मुझे अपेक्षा है।

सप्रेम
-लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

डॉ. सिंघवी देश की कई संस्थाओं और संगठनों से जुड़े हुए थे। उनका सबका व्यापक अनुभव तथा निरीक्षण था। उन्होंने अपने व्यथित भावों में मुझे लंदन के 'इंडिया हाउस' से पत्र लिखा। अंग्रेजी में लिखे इस पत्र में उन्होंने संस्कृति के राजनीतिकरण होने पर सख्त अफसोस प्रकट किया। इस पत्र में डॉ. सिंघवी के सहृदय की पारदर्शिता, सोच की शुभ्रता तथा कला-संस्कृति के प्रति प्रगाढ़ आस्था के साथ-साथ उससे जुड़ी संवेदन-सहानुभूति का इजहार मिलता है। कलामंडल जैसी संस्था के अन्तरावलोकन से फलित यह पत्र डॉ. सिंघवी के विधिवेत्ता होने का असल दस्तावेज भी है। उन्होंने तो इस संस्था को अवलोका और मात्र निहारा है जबकि मैंने तो इसमें पैंतीस वर्ष गुजारकर इसके प्रत्येक क्षण को अपनी आत्मचेतना से ज्योतिर्मय किया है। यह पत्र है-

India House,
Aldeych, London, wc.2
18 January, 1993

Dear Dr. Bhanawat,

I find it difficult to reconcile the sharp differences and antagonistic attitudes within Bhartiya Lok-Kala Mandal and feel deeply distressed. All the more so because I am far away, there is a pointless profusion and proliferation of comtative and contentious litigation and I have no wish to be dragged into meaningless meandering controversies.

All I want is to save the precious legacy of that cultural savant, Devilalji Samar, whose memory and friendship I deeply cherish. Little did I know when he asked me to be president of Bhartiya Lok-Kala Mandal that politics of culture would be worse than the decadence of the culture of politics. In view of the ferocious classes of view-points and the many events which have taken place, I do not know if I have any role of play except to appeal to all concerned to abjure the divisive ways and to adopt the path of selfless cooperation.

Your sincerely,
L. M. Singhvi

-शेष पृष्ठ सात पर

खोज-खबर

गणेश प्रथम देवता

देवों में देव गणेश प्रथम देवता के रूप में स्वीकार्य हैं। विवाह, शादी, जीमण, चूटण, निवास, वाहन खरीद या फिर अन्य मांगलिक कार्य तथा मुख्य अवसरों पर सर्वप्रथम गणेशजी की थरपना, स्मृति की जाती है और उसके बाद ही अन्य कार्य प्रारंभ किये जाते हैं। गणेशजी मुख्यत: ऋद्धि सिद्धि समृद्धि के देवता हैं। इनकी स्थापना से होने वाले कार्य निर्विघ्न समाप्त हो जाते हैं। इनकी स्थापना के बिना कार्य में विघ्न ही विघ्न पैदा होते हैं।

लोकजीवन में ऐसे कई कथा-किस्से प्रचलित हैं और वर्तमान में भी लोगों से आपबीती ; दोनों तरह की बातें सुनने को मिलती हैं। इस दृष्टि से प्रत्येक हिन्दू घर-परिवार में तथा गांव-शहर में गणेशजी के मंदिर और उनसे जुड़े कई चमत्कारी किस्से सुनने को मिलते हैं। ये किस्से इतिहास में नहीं मिलेंगे किन्तु लोकजीवन में प्रमाण रूप में मिलेंगे। इसीलिए कहा जाता है कि लिखित इतिहास से अधिक प्रामाणिक जानकारी लोक में सुनने को मिलेगी और कई बार जहां इतिहास मौन रहता है वहां लोकजीवन सर्वाधिक मुखर और जीवंत बना मिलता है।

इस दृष्टि से देखा जाय तो उदयपुर में गणेशजी के अनेक मंदिर हैं और उन मंदिरों में स्थापित गणेशजी की प्रतिमाओं के ही विविध रूप-स्वरूप नहीं मिलते हैं उनके संबंध में विविध किस्से और उनकी कार्य-सिद्धि के सबब मिलते हैं।

सर्वाधिक चर्चित और अर्थ दायक यहां के वोहरा गणेशजी हैं। वोहरा का अर्थ ही सेठ से है। सेठ वह जो आवश्यकतानुसार आर्थिक संबल दे। वोहरा गणेशजी की यही खासियत है। मांगलिक कार्य के लिए जिन्हें धन की आवश्यकता होती है वे लोग इन गणेशजी के स्थल पर पहुंचते हैं और इनसे अनुनय विनय कर आर्थिक मदद की मांग करते हैं। कहा जाता है कि एक दिन पूर्व जाकर गणेशजी को अपनी भावना व्यक्त कर दूसरे दिन व्यक्ति मनचाही रकम ले जाता है और फिर ब्याज सहित पुन: लौटाता है। ऐसे कई व्यक्तियों से आर्थिक सहायता पाने की आपबीती घटनाएं मैंने भी सुनी हैं।

इस मंदिर की स्थापना उदयपुर की स्थापना से भी पूर्व की बताई जाती है। पुजारी गणेशलाल के अनुसार यहां वर्ष भर ही भक्तों का दूर-सुदूर से आना-जाना होता रहता है। देशभर से विवाह पर कुंकुम पत्रिकाएं आती हैं जिनमें गणेशजी को निमंत्रण दिया होता है। गणेशजी सबकी सुनते हैं और कार्य निर्विघ्न संपन्न करते हैं।

उदयपुर की स्थापना के पश्चात मल्लातलाई स्थित दूधिया गणेशजी की स्थापना हुई। दूध से अभिषेक होने के कारण इनका दूधिया गणेशजी नाम पड़ा। पुजारी इन्द्रलाल सुखवाल ने बताया कि तब शहर में आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से दूध विक्रेता दूधिये यहां आते थे। वे सर्वप्रथम इन गणेशजी का अपने दूध से अभिषेक करते थे इसलिए इन्हें दूधिया गणेशजी कहा जाने लगा। वर्तमान में भी यही स्थिति है। दूध विक्रता बताते हैं कि दुग्धाभिषेक के बाद गणेशजी उनके व्यवसाय में दिनदूना रात चौगुना वधापा करते हैं।

दूधिया गणेशजी की स्थापना के आसपास ही महासतियांजी के पास भाणा गणेशजी की स्थापना की गई। भाणा से तात्पर्य बर्तन से है। पुजारी खेमशंकर शर्मा बताते हैं कि जरूरतमंद मंदिर आकर गणेशजी से अर्जी लगाते हैं और खाली बर्तन रख चले जाते हैं। गणेशजी की कृपा से उनकी जरूरत पूरी हो जाती है और कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो जाता है। भक्त पूरी निष्ठा से ब्याज सहित रकम चुकाते हैं।

दूधतलाई के पास पाला गणेशजी का मंदिर भी अन्यों की तरह चमत्कारी माना गया है। पुजारी बाबूलाल नागदा के अनुसार जब पीछोला की पाल बनने को प्रारंभ हुई तब ही यहां गणेशजी की स्थापना की गई ताकि पर्याप्त पानी भरा रह सके और यहां के निवासियों की पूर्णरूपेण सुरक्षा हो सके। पाल के पास स्थापित होने से ये गणेशजी पाल गणेशजी कहलाये और कालान्तर में पाल से पाला नाम चल पड़ा। इस प्रतिमा की स्थापना गाय के गोबर तथा मिट्टी के गणेश बनाकर विधिविधान से की गई। महाराणा की ओर से तब जो स्वर्ण-श्रृंगार धारण कराया गया था वही श्रृंगार आज भी गणेश चतुर्थी को धारण कराया जाता है।

हाथीपोल स्थित मावा गणेशजी की प्रतिमा मावा विक्रेताओं द्वारा की गई और विक्रय से पूर्व इन गणेशजी को मावा चढ़ाया जाता है। कभी इस क्षेत्र में मावा की बड़ी मंडी थी। वर्तमान में भी उसी परंपरानुसार विक्रय के लिए आया ताजा मावा चढ़ाया जाता है। यह प्रतिमा लगभग 225 वर्ष प्राचीन कही जाती है।

चांदपोल के बाहर महाराणा जवानसिंह के समय जिन गणेशजी की स्थापना की गई वह 6 फीट ऊंची एक दंतीय प्रतिमा है और आकार में जाड़ी होने से गणेशजी का नाम भी जाड़ा गणेशजी प्रचलित हो गया। पुजारी डॉ. देवेन्द्रपुरी गोस्वामी ने बताया कि ऐसी बड़ी और प्रतिमा शहर में अन्यत्र नहीं है।

आहाड़, आयड़ के सुथारवाड़े में गणेशजी की मूषक वाहिनी प्राचीन प्रतिमा पुजारी मनोहरलाल के अनुसार पुस्तैनी प्रतिमा है जो उनके पूर्वजों को खुदाई के दौरान प्राप्त हुई थी। जहां यह प्रतिमा प्राप्त हुई वहीं उसे स्थापित कर मंदिर बनवा दिया।

गणेश चतुर्थी को सभी मंदिरों में गणेशजी की विशेष आंगी की जाती है। लड्डुओं तथा विविध मिष्ठान्नों का भोग लगाया जाता है। महाआरती की जाती है। रात्रि जागरण तथा भजन भाव के उल्लास में जन-जन का उमड़ाव देखते ही बनता है। सभी मंदिरों में बिराजित गणेशजी के विविध चमत्कारों तथा अलौकिकताओं के जो अजीब किस्से सुनने को मिलते हैं उनसे भगवान गणेशजी की महिमा स्वत: सिद्ध हुई दृष्टिगत होती है।

हस्तलिखित ख्याल गुटके

मेलोंठेलों तथा ठेलों पर बिकने वाली ख्याल-तमाशा पुस्तिकाओं के अलावा हाथ से लिखी गई ख्याल पुस्तकें भी बड़ी संख्या में लोगों के पास मिलती हैं। हाथ के बने मोटे कागज पर काली स्याही से सुन्दर लिखावट में ऐसी पुस्तकें भी ख्यालप्रेमियों के वहां देखने को मिली जिनमें प्रत्येक पृष्ठ का हाशिया अलग रंग में छूटा हुआ है। अक्षर बहुत सुन्दर, सुवाच्य तथा कलम से लिखे मोटे होने से बूढ़ी आंखें भी सहजता से पढ़ने में सक्षम होती हैं। किन्हीं गुटकों में टेरों छंदों तथा पात्रों के नाम अलग स्याही में मिलते हैं।

ऐसे गुटके भी मिले जो सचित्र हैं। रेखाओं के माध्यम से पात्रों की शक्ल-सूरत, पहनावा, संवादमूलक हावभाव तथा मंचीय परिवेश तक बड़ी खूबी से चित्रित किया मिलता है। कुछेक गुटकों में रंगीन चित्रों का दरसाव भी चित्ताकर्षक लगा।

ख्यालों का एक गुटका मुनि कांतिसागर के पास था जो तब उदयपुर, भूपालपुरा में रहते थे। यह गुटका 5.6 इंच लम्बा तथा 4.2 इंच चौड़ा। इसमें दोनों ओर 6-6 सेमी. का लाल स्याही से हाशिया छुड़ा हुआ। इसके प्रत्येक पन्ने पर 10 से 15 तक पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में 16 से 39 तक अक्षर लिखे। अक्षर सुन्दर तथा सुवाच्य। कागज मोटा तथा काली स्याही में लिखा गया। ख्याल का नाम, छन्द संख्या तथा टेरें आदि लाल स्याही में लिखी हुई। इसमें कुल 29 ख्याल संग्रहीत थे।

(1) कंदोई का ख्याल (2) बड़ला रो ख्याल (3) मुसाफर रो तमासो (4) गांदी रो ख्याल (5) ढोला रो ख्याल (6) चितारा रो ख्याल (7) लिछमी गुंसाई रो ख्याल (8) वेद रो तमासो (9) कंवर हमीर रो रतना रो तमासो (10) बिजा सोरठ रो तमासो (11) चंपा गुलाब रो ख्याल (12) ख्याल (13) तमासो छोरा रो (14) हीर रंजा रो ख्याल (15) मुलतानी पठान रो तमासो (16) पदम कुंवर रो ख्याल (17) छेल बटाउ मोना राणी रो ख्याल (18) फूलां दे पठान रो ख्याल (19) बेकार रो ख्याल (20) सूतवाल रो बगड़ी रा वासी रो ख्याल (21) तोडरमल रो ख्याल (22) सेठ दोय गोरियां रो ख्याल (23) रंजा हीर रो तमासो (24) फूलजी रो ख्याल (25) सेलीवाला रो ख्याल (26) बजाज रो ख्याल (27) देवर भोजाई रो ख्याल (28) लेला मिजनूं रो ख्याल (29) छोटा कंथरी नार रो ख्याल।

गुटका जीर्ण-शीर्ण हालत में था। इसमें प्रारंभ के 18 पन्ने नहीं थे। बीच के कुछ पन्ने त्रुटित, कुछ फटे हुए तथा कुछ अप्राप्य थे। अंत के भी करीब 40-50 पन्ने गायब थे। बरसात के पानी तथा सील की वजह से जगह-जगह अक्षर बिगड़े हुए थे। अधिकतर ख्यालों में अश्लील शब्दों की भरमार थी पर चित्रों में कहीं भी इस प्रकार की अश्लीलता तथा विकृति नहीं देखी गई।

यह गुटका आसोप निवासी महात्मा तिलोकचंद का लिखा हुआ था जो स्वयं इन ख्यालों के रचनाकार भी थे। इस बात की पुष्टि ख्यालों के अंत में देखी गई। यथा-

(1) कोट अगाड़ी घूंम रया छा देख नर हर नारी : तिलोकचंद तो खेल बणायो सुंणे दुनियां सारी : दुहा धाल्या सांतरास कांई टेरां धरी मजारी।।11।। तिलोकचंद तो खेल बणायो सबके आयो दाय : जे कोई मेरी वदी करे सो जड़ां मूल से जाय।।12।। संवत् 1891 सुद असाड़ री तीज : खेल बणायो खूब मजारो नवी चलाई चिजे।।12।। संपूर्ण लिखी लाल तिलोकचंद 1891 रा मिति सावण वद 10।। (छेल बटाउ मोना राणी रो ख्याल)

(2) इति वगरी रा वाणीया रो ख्याल संपूर्ण।। लिखतं छोगाला तिलोकचंद।। अमरचंद कनासुं उचार्‌या।। आसोप मध्यै।। -सूतवाल रो वगड़ी रा वासी रो ख्याल

(3)लिखते रंगीला छेला तिलांकचंद।। आसाणा नगरे।। पोती म्हात्मा तिलाकचंद री छैजी।। श्री तिलोकचंद लिखतं।। श्री रस्तू।। (सेठ दोय गोरियां रो ख्याल)

(4) अमरचंद उसताज नैस कांई : खुब बणायो खेल : बगतावर सींघजी ठाकुर थांरी : वधो सवाई वेल।।32।। चंपा गुलाब रो ख्याल संपूर्ण।। लि।। अलबेला छेला तिलोकचंद।। वाचे जीणसुं रांम रांम छै।। सं 1871 रा मीत चेतवद 7 (चंपा गुलाब रो ख्याल)

(5) ऐति श्री रंजा हीर रो ख्याल संपूर्ण। संवत् 1891 रा मीती पोहो सुद 15।। लि।। माहातमा तिलोकचंद आसोप मध्यै रात्रो लीख्यो छै।। पोथी तिलोकचंद री छै। (रंजा हीर रो तमासो)

ख्यालों का यह पूरा गुटका संवत् 1891 में लिखा गया था परन्तु उसके बाद भी लेखक द्वारा यदा कदा इन ख्यालों में थोड़ा बहुत अंश जोड़ा-बढ़ाया लगा जो हाशिये में, ऊपर-नीचे तथा कहीं-कहीं बीच-बीच में लिखा मिला। संवत् 1892 के फाल्गुन मास में कवि ने पदम कुंवर के ख्याल में, अंत में, कुछ और अंश जोड़ा जिसका लेखनकाल कवि ने इस प्रकार दिया है-

संवत् अठारे बांणवे : फागुण मास मझार : तीलोकचंद तो खेल बणायो : कुसी वा नर नार : 19 तीलोकचंद तो खेल बणावै फाटो हुवो न्ही अपणा मन मे मसत है जका : सुदे मारग चाले : 20 इति संपुर्ण।।

गोइन्का पुरस्कार से हिन्दीसेवी सम्मानित

कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा स्थापित दक्षिण भारत के हिन्दी साहित्यकारों के लिए इकतीस हजार रुपये का 'बाबूलाल गोइन्का हिन्दी साहित्य पुरस्कार' श्रीमती पवित्रा अग्रवाल (हैदराबाद) को उनकी श्रेष्ठतम मूल कृति 'उजाले दूर नहीं' के लिए दिया गया। संग-संग सर्वश्रेष्ठ अनूदित साहित्य के लिए घोषित इकतीस हजार रुपये का 'बालकृष्ण गोइन्का अनूदित साहित्य पुरस्कार' इस वर्ष डॉ. वी. पद्मावती को उनकी अनुसृजित कृति 'कोहरे में कैद रंग' के तमिळ में अनुवाद के लिए प्रदान किया गया। साथ ही दक्षिण के हिन्दी साहित्यकारों के सम्मानार्थ घोषित 'बालकृष्ण गोइन्का हिन्दी साहित्य सम्मान' से चेन्नई के हिन्दी सेवी व साहित्यकार/पत्रकार श्री रमेश गुप्त 'नीरद' को सम्मानित किया गया।

कमला गोइन्का फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्यामसुन्दर गोइन्का ने पुरस्कृत साहित्यकारों को हिन्दी साहित्य के योगदान के लिए सराहा व सत्कारमूर्तियों का परिचय दिया। श्रीमती पवित्रा अग्रवाल, डॉ. वी. पद्मावती तथा श्री रमेश गुप्त 'नीरद' ने अपने सम्मान के लिए आभार व्यक्त करते हुए कमला गोइन्का फाउण्डेशन को धन्यवाद दिया।

समारोह अध्यक्ष 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नई' के कुल सचिव डॉ. प्रदीप शर्मा ने कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा हिन्दी साहित्य के प्रति किये जा रहे कार्यों की सराहना की।

कार्यक्रम का संचालन ईश्वर करूण ने किया। शिवकुमार गोइन्का ने आभार व्यक्त किया। समारोह का आयोजन कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा चेन्नई के अग्रवाल विद्यालय सभागृह में किया गया। इस अवसर पर चेन्नई के तमिलनाडु हिन्दी साहित्य अकादमी की अध्यक्षा डॉ. मधु धवन, श्री प्रह्लाद श्रीमाली, डॉ. एम शेषन सहित अनेक हिन्दी साहित्य रसिक उपस्थित थे।

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 01 दिसम्बर 2017

सम्पादकीय

राजा प्रजा का पात्र है

साहित्य ने सदैव ही राजसत्ता को चुनौती दी है। जनता को दलित असहाय और भीरू बनाने वाले राजतंत्र को जन के पक्ष में यदि किसी ने पछाड़ा तो वह साहित्य ही है। सर्वोपरि रूप में हावी रहकर जो राजा तक को पछांटी देने में कामयाब रहा। इसके प्रमाणस्वरूप प्रत्येक युग के साहित्य में दमखम के साथ इतिहास के पन्ने भी मुखर हुए मिलते हैं।

राजसभा में भी कवियों ने मिलकर हुंकार ही भरी। विरुदावली गायक अलग थे जो राजा की प्रशंसा में विरुद गाते। ऐसे लोगों की अलग से कोटियां बनी। राव भाट चारण सब एक मत के नहीं रहे। ऐसे भी हुए जिन्होंने राजा की प्रशंसा में लिखने को अपनी असहमति व्यक्त की। राजमद में चूर राजा को फटकार देने बिहारी ही आगे नहीं आये, चन्दवरदाई ने भी पृथ्वीराज की हेंकड़ी धवस्त कर दी थी। रासो के सम्पादन के समय साहित्य संस्थान में कविराव मोहनसिंह अपनी श्वेत दाढ़ी में हम लोगों द्वारा बनाये ऊंचे आसन पर बैठ अक्सर यह पंक्ति सुनाते तब कविराज की आंखों की भौंहें उर्ध्वगामी हो जातीं और दाढ़ी के बाल पराक्रमी हो सैनिक की भांति मचलते लगते- 'गोरी रत्तड़ तुव धरा, तू गोरी अनुरक्त।' दो अर्थी इस पंक्ति को कविराज साक्षात् चन्दवरदाई से उन्मुक्त हो प्रभावपूर्ण मंचित कर कहते- ''आक्रामक मोहम्मद गौरी तुम्हारी धरती पर अपनी नजर गड़ाये अपने टकटकीपन में पोमा रहा है और आप राजन! अपनी गोरी, संयोगिता में नजर महरबान बने अनुरक्त हैं।''

भरी सभा में कह दिया सो कह दिया। सुना दिया सो सुना दिया। किसका, काहे का डर! कवि ही तो ट्रेक बदले राजा को ठिकाने लगायेगा। यह धारा मिटी नहीं है। पिटी नहीं है। इसकी सीटी गुम नहीं हुई है। दिनकर ने हुंकार भीरी थी- 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।' राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने तो भारत भारती लिखकर स्वतंत्रता, स्वाधीनता और आजादी का जो माहौल बनाया वह स्वर्णाक्षरों में ही जड़ित हो गया। उन्होंने लिखा- 'राजा प्रजा का पात्र है, वह एक प्रतिनिधि मात्र है।' लोकतंत्र का राजा लोक द्वारा, जनता द्वारा चुना जाता है। वह प्रजा पालक, प्रजा हितैषी और प्रजा की उम्मीदों पर खरा उतरने वाला होना चाहिये। वह प्रजा का केवल पात्र और प्रतिनिधि मात्र है।'

यह महत्वपूर्ण, उल्लेखनीय और रेखांकित जोग लिखी है कि भारतीय स्वतंत्रता के बाद जनता का जो भी शासक आया वह पार्टी-प्रणेता रहा। नरेन्द्र मोदी के साथ यह पक्ष दृष्टिगत है कि वे भी खड़े तो भाजपा की ओर से हुए मगर जनता ने उनकी व्यक्तिगत छवि के प्रभाव में आकर उन्हें ही नहीं, उनके साथ उनकी पार्टी को भी विजयश्री दिलाई है इसीलिए मोदीजी भी जनता के बीच उस वैद्य की तरह बने हुए हैं जो जन का चेहरा देखकर, जन की नाड़ी देखकर ही भांप जाते हैं कि हवा का, जन का, किसी संभावित रोग याकि बला का रुख किधर है।

नोटबंदी का माहौल शुरूआत से अब तक देश की जनता देख ही नहीं, भोग भी रही है और उसकी पीड़ा से भी रु-ब-रु हुई है। यह दर्द नारू रोग की तरह रहा जो जिस अंग में लग गया उसमें बढ़ता रहा, आगे से आगे अपना मुख बनाता रोगी को जबर्दस्त दुख पहुंचाता रहा पर जो लक्ष्य और छिपा हुआ भाव था वह प्रसव पीड़ा की तरह का था। अब सुख के दिनों की प्रतीक्षा है। जो कागले कांव-कांव करते रहे, उनकी बोलती भी अब बंद पड़ गई है। मंद हो गई है। आजादी पाने के लिए जिन्होंने नाना कष्ट सहे, जलियावाला बाग काण्ड देखा, भोगा और इधर मेवाड़ के आदिवासी समाज में मानगढ़ की पहाड़ी पर जो घमासान हुआ वह यदि जगजाहिर हो जाता तो जलियावाला जलजला भी जुड़वा भाई सा ही लगता।

भारत-देश गांवों का है मगर गंवार नहीं है। शिक्षा कम है मगर समझ पूरी है। मोदी जो काला धन बटोर रहे हैं, बता रहे हैं कि यह देश पहले ही नहीं, अब भी सोने की चिड़िया ही है। देखते जाओ।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' में प्रकाशित छोटीसादड़ी गुरुकुल सम्बंधी संस्मरण पढ़कर एक घटना की याद हो आई है। चित्तौड़ के गाड़िया लुहार सम्मेलन में पं. जवाहरलाल नेहरू आये थे तब गुरुकुल से मैं, बाबूलाल दरड़ा, शान्तिलाल बांठिया, मुन्नालाल उर्फ हरीश अग्रवाल, शैतानमल विनायका आदि उस समारोह में स्काउट वॉलंटियर की हैसियत से भेजे गये थे। वहां हमें किले पर जल में बने रानी पद्मावती के महल में ठहराया गया था। चांदनी रात का बड़ा सुहावना मौसम था पर हमारे मन में भूत-प्रेत की डरावनी भावना घर कर गई और हम नाना प्रसंगों-घटनाओं में गिर गये। इतने डर गये कि नींद ही नहीं आई तब हम रात भर जागे, बैठे रहे। बदनावर के शैतानमल ने कह दिया कि यहां तो कुछ न कुछ अजीब अटपटा महसूस हो रहा है। उसके इस कथन ने हम सबको और अधिक डरपोक एवं भयग्रस्त बना दिया मगर चुप रहने के सिवाय और कोई चारा नहीं था।आज भी उस घटना को याद कर रौंगटे खड़े हो जाते हैं और एक सिहरन सी दौड़ जाती है। पता नहीं, पूरा किला ही रात को ऐसा हो जाता है या फिर पद्मावती महल; वहां कैसी-कैसी घटनाएं घटी होंगी। **-सिरेमल सेठिया, रतलाम**

15 दिसंबर के अंक में गांव, युवक और समझ का बदलता स्वरूप शीर्षक से मेरा लेख छापने के लिए मैं आपका आभारी हूं पर इस स्तम्भ के माध्यम से मैं पाठकों को यह बताना भी आवश्यक समझता हूं कि आपकी पत्रिका के 15 नवम्बर के अंक में पृष्ठ 7 पर छपा मेरा लेख 'बदलाव के मोड़ पर श्रीनाथजी की नगरी' इसी लेख का उत्तरार्द्ध है और उसे वस्तुत: इसी रूप में पढ़ा जाना चाहिए। **-सदाशिव श्रोत्रिय, नाथद्वारा**

टोटकों से वर्षा का आह्वान

जीवन जीने की कई आवश्यकताओं में हवा-पानी सबसे अनिवार्य समझे गये हैं। पानी पर सर्वाधिक जानकारियां मिलती हैं। कथा, किस्सों, मिथकों में भी पानी की दास्तान अनगिनत हैं। पानी संबंधी कहावतें और पानी के विविध नाम-प्रकार भी आश्चर्य देने वाले हैं। सबसे अधिक मशक्कत भी पानी के लिए और हाहाकार भी पानी के लिए करनी पड़ती है। साहित्य और लोककंठों पर पानी के अनेकानेक संदर्भ हैं।

ऐसे पानी का जीवनदानी प्रताप जब गड्डमड्ड हुआ नजर आता है तब जनजीवन में हायतौबा मच जाता है। जीना दूभर हो जाता है। पानी से भी अधिक कीमती वस्तुएं तब व्यर्थ लगती हैं। राजस्थान प्रदेश का बहुत कुछ हिस्सा रेतीला है। वहां मीलों तक रेत ही रेत दिखाई देती है। पानी ढूंढे भी बड़ी मुश्किल से मिलता है। रेगिस्तान रेतीस्थान ही होता है। वहां कुए भी बहुत गहरे होते हैं। पानी ठेठ पाताल में दिखाई देता है। शेष हिस्सों में भी अनियमित बरसात होती है। मेवाड़ का क्षेत्र तो सरसब्ज रहा ही नहीं। यहां अकाल बहुत पड़े। गीतों, कथाओं, बातों में अकाल के वर्णन दिल दहला देने वाले हैं।

इसीलिए यहां वर्षा का महत्व है। वर्षा नहीं होने पर जनजीवन बड़ा अस्तव्यस्त, दुखदायी और घोर निराशा में डूबा देवी-देवताओं, अदृश्य शक्तियों की मनौती की शरण लेता है। भांति-भांति के टोटके करता है। कभी इन्द्र की वंदना अभ्यर्थना करता है तो कभी उसे बुरी तरह कोसता प्रतीत होता है। इन्द्र कुपित होता है तो जनता भी कम कुपित नहीं होती। वह भी अपने रंग-ढंग से इन्द्र और इन्द्राणी तक को सजा देने में कोई कसर नहीं रखती।

वर्षा नहीं आने पर गांव-गांव, घर-घर बड़ी बेचैनी फैल जाती है। नाना प्रकार की मनौतियां बोली जाती हैं। नाना प्रकार के टोनेटोटके किये जाते हैं। समूहबद्ध अनुष्ठान किये जाते हैं। इनमें सर्वोपरि गांव के बाहर जातिगत गोठ, समूहभोज मुख्य है। यह जातिगत और सर्वजनकारी भी होता है। ऐसा भोज उजेणी कहलाता है। प्रसिद्धि है कि जब घोर अकाल पड़ा तब राजा विक्रमादित्य ने ऐसा आयोजन किया था। आयोजन समाप्ति के बाद जब संध्या को लोग अपने-अपने घर लौट रहे थे तब जोर की बरसात हुई जिससे उजेणी का सकारात्मक सार्थक प्रभाव प्रत्येक जन को आह्लादित कर गया। धीरे-धीरे सबके कंठों पर उजेणी ऐसा चढ़ा कि महाकाल की स्थापना हुई और तांबावती नाम से जाने जाने वाली नगरी उजेणी नाम से चर्चित होती कालान्तर में उज्जैन कहलाई।

पीपल में देवी-देवता का वास कहा गया है। अत: मोहल्ले पड़ौस की औरतें मिल पीपल की पूजा करती हैं। वहां से लौटते समय पानी भरा छलकता कलश लेकर चलती हैं और रास्ते में जो भी मिलता है उसे पानी छींटती हैं। इससे लोगों में हड़कंप मच जाता है। कहते हैं, इस क्रिया से इन्द्र प्रसन्न हो बरस पड़ता है। कुछ महिलाएं अपने-अपने घरों से मिट्टी के बर्तन में कचराकूड़ा भर पास के चौराहे पर पटक आने का टोटका करती हैं।

कुछ बालिकाएं मिलकर कवेलू पर गोबर की मेंढ़की बना घर-घर घूमती- 'मेंढ़की ने पाणी पावो, धोबो-धोबो धान भरावो' पंक्ति का उच्चारण करती हैं तब गृहस्वामिनी उस मेंढ़की पर पानी की धार देकर बालिकाओं को मुट्ठी-मुट्ठी, धोबा-धोबा धान की दक्षिणा देकर विदा करती हैं। कुछ मनचले गधा-गधी का विवाह रचाकर मसखरी करते पूरे गांव में फेरी लगाते हैं।

गांव की औरतें मिल एक मटकी में कुंकुम लच्छा चावल तथा लाल कपड़ा रख बड़े हरख के साथ गांव बाहर गीत गाती जाती हैं और घने वृक्ष के नीचे वह मटकी फौड़ लौट पड़ती हैं। कई गांवों में जहां मामादेव, गोगादेव, खेड़ादेव, गूगर्‌यादेव, कल्लादेव थरपित किये होते हैं वहां उनके देवरे, मंदरी, चौकी या फिर स्थानक पर जाकर माटी के बने घोड़े चढ़ाते हैं। मान्यता है कि इन्द्रदेव प्रसन्न हो, द्रुतगति से घोड़े पर सवारी करते आयेंगे और पानी की वर्षा कर धरती को खुशहाली देंगे।

मटकी में मिर्च मिली राख की पींडी रख चौराहे पर धमाका करने का टोटका भी प्रचलन में है। कहीं घर के बाहर दीवाल पर उल्टे मुंह इन्द्र का गोबरांकन किया जाता है तो कहीं कुंकुम अथवा कोयले के इन्द्र-इन्द्राणी औंधे मुंह मांडे जाते हैं ताकि वे चिढ़ कर ही सही, बरसें तो सही। आटे के इन्द्र-इन्द्राणी बनाकर उनके समक्ष मिष्ठान्न की धूप-बत्ती कर भी बरसात की कामना की जाती है।

रात्रि को जब सब सो जाते हैं तब मोहल्ले की औरतें योजनाबद्ध रूप में निर्वस्त्र हो नाचती-कूदती अपने-अपने घर से निकल पड़ती हैं और पास के दवस्थान को स्पर्श कर लौट पड़ती हैं। इससे वर्षा देव मारे लज्जा के बरसात देकर सबके कोप भाजन से मुक्त हुआ समझा जाता है।

अपने गांव में जिस प्रोल में मैं रहता था, उसके आसपास की बस्ती में मेरी उम्र के आठ-दस बच्चे और थे। कुछ बच्चों की माओं ने मिल हमें निर्वस्त्र कर दिया। छोटी उम्र होने के कारण हमें कोई लज्जा नहीं हुई अपितु अति प्रसन्न होकर समूह रूप में नंगधड़ंग अवस्था में निम्नांकित गाते निकल पड़े-

मेह बाबा आजा/ घी रोटी खाजा
आयो बाबो परदेसी/खाली कोठा भरदेसी
ढांकणी में ढोकलो / मेह बाबो मोकलो।

अर्थात् मेह बाबा अथवा वर्षा देव इन्द्र! तू आ और हमारे साथ घी-रोटी खा। इस बाल-मनुहार पर रीझ कर सचमुच परदेशी पाहुन मेहबाबा आयेगा और धान संरक्षित करने के माटी के बने कोठे भर देगा। ढक्कन में ढोकला नामक खाद्य विशेष रख मेहबाबे को निमंत्रण देते ही मेहबाबा हाजिर हो जोर की वर्षा करता है।

इतने अनुष्ठानमूलक टोटकों से अंतत: इन्द्रदेव अकाल मेटते, समेटते हैं और बरसात कर जन-जन को नया जीवन प्रदान करते हैं। म.भा.

राजस्थान अनावृष्टि का तो घर है ही पर कभी-कभी अतिवृष्टि के लिए भी ताबड़तोड़ जीवन देकर मुश्किलें पैदा कर देता है। ऐसी स्थिति में बरसात रुकने का नाम नहीं लेती। अपने बचपन में मैंने अपने गांव में अतिवृष्टि का कमाल देखा है। तालाब का ओटा चलने लग गया और देखते-देखते पूरे गांव को पानी ने अपनी चपेट में ले लिया तब एक आदिवासी को ढोल के साथ आगे कर भैरु को मनाया गया। गीत था-

भैरु थांनै पूजां ओ भैरु थांनै पूजां
भैरु ढोला रो ढमको वाजै थांनै पूजां
भैरु धरती धूजाड़ो मती थांनै पूजां
भैरु दुखिया री साय कीजौ थांनै पूजां
भैरु मनखां री मार घणी थांनै पूजां
भैरु बजुबां बेमौत मरे थांनै पूजां
भैरु बीजरी री वार मेटो थांनै पूजां

अर्थात् ढोल के ढमाके के साथ भैरु तुम्हारी पूजा करते हैं। धरती कंपायमान रोको। दुखिया की सुध लो। मनुष्य मारे जा रहे हैं। अबोले जीव बेमौत काल कवलित हो रहे हैं। जोरशोर से बीजली कड़क रही है। सारे दुख दूर करो। तुम्हारी पूजा करते हैं।

अक्षय टाटा मोटर्स के ब्रांड एंबेसडर बने

उदयपुर। टाटा मोटर्स ने अक्षय कुमार को ब्रांड एंबेसडर नियुक्त किया है। कॉमर्शियल वाहन कारोबार इकाई के कार्यकारी निदेशक रविंद्र पिशारोडी ने कहा कि कॉमर्शियल वाहनों के लिए अक्षय कुमार के साथ टाटा मोटर्स के गठजोड़ के समर्थन के लिए एक उच्च स्तरीय मल्टी मीडिया अभियान भी चलाया जाएगा जिसकी शुरूआत जनवरी में होगी। अक्षय ने कहा कि प्रोडक्ट शूट के दौरान ब्रांड की फौलादी मशीनों की ड्राइवर सीट पर बैठना बेहद दिलचस्प अनुभव था।

ब्रेव्ज रॉक कैफे का शुभारम्भ

उदयपुर। नववर्ष की पूर्व संध्या पर सेलिब्रेशन मॉल में ब्रेव्ज रॉक कैफे का शुभारंभ हुआ। यहां युवाओं सहित हर वर्ग के पसन्द की वेज व नॉन वेज की विभिन्न प्रकार की खाने की वैरायटी उपलब्ध होगी। कैफे की सबसे बड़ी बात यह है कि यहां एक ऐसा स्टेज बनाया गया है जहां प्रतिदिन मनोरंजन के कार्यक्रम आयोजित होंगे ताकि आगन्तुक खाने के साथ-साथ लाइव म्यूजिक का आनन्द भी ले सके।

शनिवार को आयोजित प्रेसवार्ता में ब्रेव्ज रॉक कैफे के शौर्य सुदर्शन ने बताया कि कैफे में बड़ा स्टेज बनाया गया है जहां पर कैफे की ओर से तो प्रतिदिन संगीत का कार्यक्रम होगा साथ ही यदि शहर की कोई प्रतिभा अपनी संगीत कला का प्रदर्शन करना चाहती है तो उसके लिए भी यह मंच उपलब्ध होगा।

कैफे के लोकेश कुमार ने बताया कि यह शहर का पहला ऐसा कैफे होगा जिसमें युवाओं के मनोरंजन के लिए डिस्को थेक की सुविधा उपलब्ध होगी। वेज खाने की शुरूआत सूप से होगी और स्टार्टर से होते हुए मेन कोर्स में डेजर्ट सहित 8 प्रकार की वैरायटी पेश की जाएगी।

बालसाहित्य में डॉ. भानावत की पहुंच

-डॉ. रमेश 'मयंक'-

डॉ. महेन्द्र भानावत लोककला मर्मज्ञ, लब्ध प्रतिष्ठित चिंतक एवं मनीषी प्रतिनिधि कवि तथा ख्यातनाम रचनाकार के रूप में चर्चित हैं। उनके सृजन का एक पक्ष बालसाहित्य से भी जुड़ा हुआ है। उनकी बालसाहित्य से जुड़ी हुई प्रतिनिधि कृतियों के रूप में 'अमृत पुत्र जयप्रकाश', 'साब का टोकर', 'यति का चमत्कार', 'साब और सर्टिफिकेट', 'सवा हाथ का गंगाराम', 'हम भी ऐसे बनें', 'आंखों का प्रकाश', 'डेली मौसी की डीकारी', 'देखते चलो' तथा 'पूरे कुएं भांग' है।

लोकनाट्य पर विशेष अध्येता के रूप में जानेमाने डॉ. भानावत का 'अमृत पुत्र जयप्रकाश' एक वाणी नाट्य है। लोकनायक जयप्रकाश के अमृत महोत्सव के अवसर पर वाणी नाट्य लिखकर महेन्द्रजी ने नि:संदेह बड़ा कार्य किया। आयु की दृष्टि से किशोरोपयोगी बालकों के लिए प्रेरणास्पद इस कृति के माध्यम से जयप्रकाश के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं उनकी प्रतिभा, अवदान व उनसे ग्रहण करने योग्य प्रेरणा को रेखांकित किया गया है- 'जयप्रकाश प्रतीक है- अमृतपुत्र, अंधकार में प्रकाश, जननायक, देश के प्रकाश का। वह है- महामानव, युगपुरूष, सर्वोदय व भूमौदय का प्रेरक, शोषितों का संबल, पीड़ितों का पोषक। उन्हें याद रखा जाएगा जनता जनार्दन के लिए समर्पित साधक यश:पूत के रूप में। वह एक अनवरत जलती मशाल की तरह थे, जिन्होंने गांधी के बाद आपात का अंधेरा खाते देश को अंगुली पकड़कर सहारा दिया जिससे समाज-देश और समग्र मानवता को लाभ मिला।'

डॉ. भानावत ने उन्हें देश का ज्योति स्तंभ, अगस्त क्रांति का नायक, नौनिहालों-नौजवानों में उत्साह भरने वाला तथा युवा शक्ति का प्रतीक कहा है। मुझे आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता की अनुभूति हुई कि इस कृति के माध्यम से उन्होंने सरल, सरस व प्रभावी अभिव्यक्ति की है। उनका व्यक्तित्व- जन गण मन की उत्कंठाओं/ आकांक्षाओं और उम्मीदों को / पूरा करने वाले / समग्र देश की माटी का विधिना व्यक्तित्व / गर्वोन्नत भाल वाले / हिमालय सा हौंसला व गंगा सी वाणी में / ओजपूर्ण हुंकार वाले का अभिनंदन!

जयप्रकाश कहते थे- मेरे सपनों का भारत / एक ऐसा समुदाय है / जिसमें हर एक व्यक्ति / हर एक साधक /निर्बल की सेवा के लिए समर्पित है।

नि:संदेह इस अनुपम कृति के माध्यम से अन्त्योदय और असहायों के कल्याण की कामना करने वाले, अलख जगाने वाले, लोक में आलोक फैलाने वाले, पीड़ितों को पीड़ा से मुक्त कराने वाले, लोकक्रांति के लिए लोकशिक्षण को बढ़ावा देने वाले, जनता का संगठन बनाने वाले और सम्पूर्ण क्रांति का बिगुल बजाने वाले का सदैव स्मरण किया जाएगा। भावी पीढ़ी उन्हें बिहार के अकाल से लड़ने वाले, सर्वोदयी, निडर, अजेय योद्धा के रूप में तथा डॉ. भानावत को प्रभावी प्रस्तुति हेतु याद रखेगी।

बालक अभिनय के माध्यम से जो कुछ उसकी आंखों के सामने घटित होता है उसे याद भी रखता है तथा सीखता भी है। 'साब का टोकर' एक लघु एकांकी है। इसमें एक कार्यालय के अधिकारी, बाबू व चपरासी से जुड़े संवाद हैं। अधिकारी बड़ा चतुरबाज, प्रतिदिन कुछ को पचाता, कुछ को नचाता है। किसी पर विश्वास नहीं करता मगर भरपूर अहसान लादता है। वह दूध नहीं देता मगर स्वयं के लिए रोटी चूर लेता है। चपरासी आलू तारीफों के पुल बांधता है। वह अधिकारी को मालिक कहता है। भगवान मानता है। रोजी-रोटी देने वाला, पेट भरने वाला तथा बाबू भोगाराम कहता है-'हमें न कुर्सी चाहिए न टोकर। सच्चे इंसान की जरूरत है। हर इंसान अपनी इंसानियत को साफ रखे, इसी की जरूरत है।'

यह कृति कार्यालयों में बढ़ती चापलूसी व गायब होती इंसानियत का परिदृश्य प्रस्तुत करती हुई अपने उद्देश्य का सफलता से सार्थक प्रतिपादन करती है।

'यति का चमत्कार' में तीन कहानियां- रतना का देश प्रेम, रावल और रूठे दम्पत्ति तथा यति का चमत्कार है। 'रतना का देश प्रेम' में बीकाजी की सफलता के पीछे रतना का योगदान, पीलोत जलाकर रास्ता दिखाना जिससे बीकाजी का सुरक्षित लौट आना के रूप में था। जब बीकाजी ने उसके योगदान को नकार दिया ता वह रास्ता भटक गए तथा मेवाड़ी सेना ने उनको घेर लिया व मारे गए। बालकों के लिए शिक्षाप्रद इस कहानी में जैसी करनी, वैसी भरनी। डाका डालने पर मारा जाना तथा नारी के योगदान का सदैव मान रखना, इमानदारी से काम करना न कि लूटपाट मचाना के रूप में सीख मिलती है।

'रावल और रूठे दम्पत्ति' कहानी इस कथन की पुष्टि करती है कि रावल लोग रूठे दम्पत्ति को मनाने में माहिर होते हैं। कला चातुरी द्वारा कठिन कार्य को भी किया जा सकता है एवं पति-पत्नी के बीच अबोला (अनबन) नहीं रहना चाहिए। बार-बार कोशिश करते रहना चाहिए तथा जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो, निराश नहीं होकर प्रयत्नशील रहना चाहिए। 'यति का चमत्कार' में जालमसिंह के एक साधारण सिपाही से झालावाड़ रियासत के स्वामी बनने की कथा है। यंत्र-मंत्र, खून से रंगी रुई, मंत्र बल का कथानक में प्रयोग, यति की मौत हमें सद्कर्मों की प्रेरणा देती है।

'साब का सर्टिफिकेट' लघु नाटक में गधा, बंदर, भालू व घघरी पल्टन के नाच के संदर्भ हैं। लिखित प्रमाण स्वरूप सभी को साहब का सर्टिफिकेट चाहिए। घघरी कहती है- 'पापी है पेट, दुनियां बड़ी बुरी है। मरने में दूरी जीना मजबूरी है।' पेट भरने के लिए कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा, चाहे नाच दिखाना पड़े। लोकनुरंजनपरक भाषा, शैली का प्रयोग सराहनीय हुआ है।

'सवा हाथ का गंगाराम' में आठ कहानियां हैं- गलकी का श्राप, अनोखा कुंवर, जड़ेली का कमाल, महाराणा की फतह, पानी पर पैदल यात्रा तथा सवा हाथ का गंगाराम आदि। नटनी का चबूतरा उदयपुर की पीछोला झील में बना हुआ है। उससे जुड़े कथानक को (जो लोकश्रुत है) 'गलकी का श्राप' में प्रस्तुत किया गया है। नट जाति अपनी कलाबाजी दिखाने के लिए उदयपुर की सीमा चीरवा घाटा, केवड़ा की नाल, कलसीगढ़ तथा देबारी दरवाजे के भीतर प्रवेश नहीं करती। यह कहानी बताती है कि सच्चे और अच्छे कलाकारों के कद्रदान तो होते हैं, मगर बिचौलिए कभी उन्हें पनपने नहीं देते।

'अनोखा कुंवर' कहानी देश के प्रति लगन, भक्ति, कर्तव्य और वफादारी की सीख देती है। मेवाड़ का मान और महिमा बचाने वाला अनोखा कुंवर मेवाड़ के महाराणा के इत्र न खरीदने की बात को समय रहते संभाल लेते हैं व महाराणा को बादशाह के सामने नीचा नहीं दिखाने देते।

जड़ेली का कमाल मेघला बाबरी की, महाराणा की फतह चित्रकार कुंदनलाल की तथा पानी पर पैदल यात्रा खाकी जीव सांई के करिश्मे की कहानियां हैं। सवा हाथ का गंगाराम जूते का नाम है जिसका उपयोग महाराणाओं के जमाने में कड़ी से कड़ी सजा देने के लिए किया जाता था। लाख के मनके जोधा भांड की कहानी है। ये सभी कहानियां सरल, सरस, रोचक व प्रेरणास्पद हैं।

'हम भी ऐसे बने' में भानावतजी की 18 बाल कविताएं हैं। शिशु प्रार्थना, अच्छे बच्चे, झूठे का मुंह काला, आओ देश बनाएं, सूरज से, गुलाबी मौसी आदि प्रतिनिधि रचनाएं हैं। अच्छे बच्चे में अच्छा पढ़ने, अच्छे नम्बर पाने, जल्दी उठने, सत्य बोलने व जिद्द नहीं करने वाले बालकों का उल्लेख है। 'आओ देश बनाएं' कविता में एक रचनात्मक संदेश है-

सबके लिए सभी सुविधाएं,
कोई न वंचित हो सब पाएं।
छोटा हो परिवार किन्तु,
उत्पादन अधिक बढ़ाएं।

सभी कविताएं रोचक एवं शिक्षाप्रद हैं जो बालमन को लुभाती हैं।

'आंखों का प्रकाश' नेत्रदान महादान पर आधारित लघु नाटिका है। इसमें नेत्र चिकित्सा शिविरों के माध्यम से मोतियाबिंद कालापनी से छुटकारा दिलाने व नेत्र ज्योजि पुन: पाने का परोपकारी संदेश है। बालकों को इस पुनीत कार्य में मदद करनी चाहिए। 'डेली मौसी की डीकरी' कहानी सीखाती है कि बालकों को घर-गृहस्थी के झंझट में नहीं डालकर होशियार बनाकर पढ़ना-लिखना सीखाने की तरफ ध्यान देना चाहिए। यह कहानी विधवा विवाह करने व बाल विवाह, बेमेल विवाह रोकने की शिक्षा देती है।

'देखते चलो' बाल नाटक है जो रेखांकित करता है कि आदमी ने हवा, पानी और प्रकृति में बदलाव ला दिया है। 'पूरे कुएं पर भांग' नाटक में व्यवस्थाओं के बीच बढ़ती अव्यवस्थाओं का कथानक है। नौकर दूध घटक जाते हैं और पानी मिलाकर कुंवर को पिला देते हैं। व्यक्ति को अपना काम खुद करना चाहिए। किसी के भरोसे नहीं रहना चाहिए।

इस प्रकार डॉ. महेन्द्र भानावत एक प्रसिद्ध व प्रतिनिधि बाल साहित्यकार के रूप में उल्लेखनीय हैं। इनकी बालसाहित्य से जुड़ी रचनाओं में बहुमुखी प्रतिभा प्रकट होती है परन्तु प्रधान स्वर कवि, नाटककार व कहानीकार का रहा है। सरल, सरस, प्रभावी एवं प्रवाही भाषा बाल-मन को छूती है जो न केवल मनोरंजन करती है अपितु बालकों के लिए प्रेरणास्पद, शिखाप्रद भी है।

मेरी विनम्र सम्मति में डॉ. महेन्द्र भानावत को एक प्रतिनिधि बालसाहित्यकार के रूप में लम्बे समय तक अविस्मरणीय रूप में याद किया जाएगा।

पाबू पड़गाथा का जीवंत दस्तावेज

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'-

राजस्थान लोकसाहित्य की बिखरी सम्पदा के लिए प्रसिद्ध है। इस धरती ने लोक के महापुरुषों को लोकदेवता के रूप में न केवल स्वीकारा बल्कि उनकी पूजा, उपासना भी प्रारंभ की। प्रस्तर प्रतिमाओं का निर्माण कर स्थंडिल, देवरों, चत्वरों-चबूतरों पर प्रतिष्ठित किया तथा पूजा-स्थलों की परिपाटी को जनम दिया। लोकसंस्कृति की यही विशेषता है कि गुणधारक पुरूष के लिए वह सदैव नम्य-प्रणम्य रही है तथा उसके लिए सदा आदर की सरिता प्रवाहित करने का लोकाभिस्वीकृति उपक्रम किया है।

लोक के ऐसे ही एक महापुरुष हुए हैं पाबूजी। मारवाड़ के राठौड़ वंशी पाबूजी ने लोकसमुदाय को जो आदर्श दिये वे लोकमूल्यों के रूप में विशिष्ट मानवीय संवेदना को प्रस्तुत करते हैं। लोक के ये ही मूल्य हमारे बीच मिथकीय रूप में भले ही स्वीकार्य हों, किन्तु अभिजात्य वर्ग में वे पौराणिक, वैदिक स्वरूप में कहीं कमजोर नहीं। यथा-गोरक्षा, अतिथि सत्कार, नारी के प्रति सम्मान, प्रण पालन, सदायशता, परम्पराओं के प्रति सम्मान, वचन निर्वाह आदि वे गुण हैं, जो लोक से लेकर शास्त्र तक अपनी अर्थ व्याप्ति लिए पूर्ण आदर्श के रूप में विद्यमान हैं।

राजस्थान में पाबूजी के कड़े, छोये, पवाड़े तो गाये जाते ही हैं, उनका पड़ शैली में चित्रांकन, व्यक्तित्व के साथ ही उनके कृतित्व का गायन भी भोयों द्वारा परम्परागत रूप से किया जाता है। पाबूजी के मण्ड, मंदिरों के पुजारियों, ऊंट पालक राइकों के साथ ही पड़-भोपों द्वारा पड़ के प्रदर्शन के साथ जीवनगाथा के गायन की परम्परा को प्रथम बार सुधी लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने अपनी कृति 'पाबूजी की पड़' में उजागर किया है।

इस कृति में जहां भोपों से पूछकर-गवाकर लिखी गई गाथा का करीब 40 वर्ष पुराना मूल पाठ संपादित है, वहीं उसमें तत्कालीन प्रचलित शब्दावली का यथास्थान पाद-टिप्पण के रूप में अर्थ भी दिया गया है। गायकी और वारता के रूप में यह गाथा पाबूजी की लीलास्थली कोलूमंड से प्रारंभ होती है। उनके जन्म अवसर पर कई शकुन होते हैं। लोकपुरुष के आविर्भाव अवसर पर होने वाले ये पूर्वाभास उसके कालजयी जीवन-जूण होने का संकेत देते हैं। पाबूजी वीरवर लक्ष्मण के अवतार हैं। लक्ष्मण स्वयं शेषनाग के अवतार माने जाते हैं। पाबूजी अपनी लीलाएं करते हैं। केसर कालमी घोड़ी पर सवार होकर लंका (सिंध की लंकास्थली) तक की यात्रा करते हैं तथा परचे देते हैं। चमत्कार दिखाते हैं।

लोकमहापुरुषों के चमत्कार-प्रसंगों का भी पूरा व्याकरण है। इसमें संज्ञा से लेकर सर्वनाम, विशेषण, उपसर्ग, प्रत्यय से लेकर संधि और समास तक अपनी विशेषताओं से ओतप्रोत होते हैं। वाक्य पद तथा परिच्छेद तक लोकलीला लहरों को आत्मसात किए कंठ-कोश पर प्रवहमान होते हैं। पाबूजी की पड़ में यही व्याकरण जीवंत होता है।

इसमें समय का सच है। इतिहास है। कला है। संस्कृति है। चमत्कार है। आराधना, उपासना, यात्रा, संस्मरण, पूछताछ तथा जीवन से जुड़े अन्य विविध प्रसंग, अनुष्ठान, संस्कार तथा सरोकार भी सन्निहित हैं। लोकसाहित्य की यही अद्वितीय विशेषता है कि एक ओर जहां वह इतिहास के लिए होता है, वहीं उसमें पुराण का परिवेश भी विद्यमान होता है। भूगोल और समाजशास्त्र ही नहीं, राजनीति, विज्ञान और अन्यान्य मानविकी शास्त्रों के पहलू भी उसमें यत्र-तत्र गुंफित मिलते हैं। वे कभी काल-कवलित नहीं होते। कंठकोश उन्हें सदैव आदर देता है।

- शेष पृष्ठ सात पर

उदयपुर में वोडाफोन सुपरनेट 4जी लॉन्च

उदयपुर। भारत के प्रमुख टेलीकम्युनिकेशन सेवा प्रदाता, वोडाफोन इण्डिया ने मंगलवार को उदयुपर में वोडाफोन सुपरनेट 4जी सेवा लॉन्च की। इस अवसर पर लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ भी उपस्थित थे।

वोडाफोन इण्डिया राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने प्रेसवार्ता में बताया कि कहा पिछले कुछ दिनों में जोधपुर, अजमेर, कोटा और सीकर में वोडाफोन सुपरनेट 4जी की सफलतापूर्वक लॉन्चिग की गई। इसी क्रम में उदयपुर में इस सेवा को लॉन्च किया गया है। अगले कुछ महीनों में यह सेवा राजस्थान के कई अन्य स्थानों पर उपलब्ध होगी। उन्होंने बताया कि अत्याधुनिक नेटवर्क वोडाफोन सुपरनेट 4जी उपभोक्ताओं को माय-फाय एवं डोंगल के माध्यम से तेज़ गति की इन्टरनेट सेवाएं उपलब्ध कराएगा। देशभर में मौजूद अग्रणी स्मार्टफोन निर्माताओं के द्वारा पेश किए गए 4जी इनेबल्ड हैण्डसैट पर उपभोक्ता 4जी सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। वोडाफोन सुपरनेट 4जी उन उपभोक्ताओं के लिए मोबाइल इन्टरनेट के अनुभव को बेहतर बनाएगा जो तेज़ गति पर वीडियो और म्युज़िक डाउनलोड अपलोड करना चाहते हैं, सहज वीडियो चैट का लाभ उठाना चाहते हैं या आसानी से अपने पसंदीदा ऐप्स पर कनेक्ट होना चाहते हैं। उपभोक्ता कई अन्य फीचर्स जैसे हाई-डेफिनेशन वीडियो स्ट्रीमिंग, मोबाइल गेमिंग एवं दो-तरफा वीडियो कॉलिंग का भी लाभ उठा सकते हैं। राजस्थान में वोडाफोन सुपरनेट 4जी सेवाएं सशक्त फाईबल बैकहॉल पर बनाई गई हैं तथा इसके नए एवं अत्याधुनिक नेटवर्क पर सुपरफास्ट 3जी सेवाओं द्वारा समर्थित हैं। विश्वस्तरीय नेटवर्क के साथ, वोडाफोन अपने भारतीय उपभोक्ताओं के लिए 4जी पर इन्टरनेशनल रोमिंग भी उपलब्ध कराता है। यूके, नीदरलैण्ड्स, जर्मनी, हंगरी, अल्बानिया, स्पेन सहित 40 से अधिक देशों में जाने वाले उपभोक्ता इन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। इसके अलावा निकट भविष्य में कई और देश इस सूची में शामिल हो जाएंगे। जल्द ही वोडाफोन सुपरनेट 4जी सेवाएं गोवा, पंजाब, यूपी वेस्ट, चेन्नई एवं तमिलनाडू में उपलब्ध कराई जायेगी और मार्च 2017 तक 17 सर्कलों के 2400 नगरों में उपलब्ध होगी।

माहेश्वरी लॉजिस्टिक्स लि. का एसएमई सेगमेंट में पहला आइपीओ

उदयपुर। माहेश्वरी लॉजिस्टिक्स लि. ने नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लि. ('एनएसई इमर्ज') के इमर्ज प्लेटफॉर्म पर 2717.28 लाख रूपये के सार्वजनिक निर्गम का प्रस्ताव रखा है। कंपनी ने 68 रूपये प्रति शेयर की तय कीमत पर 10 रूपये के सममूल्य पर 39,96,000 इक्विटी शेयरों के नये निर्गम का प्रस्ताव रखा है। इसमें 58 रूपये प्रति शेयर का प्रीमियम भी शामिल है।

इस निर्गम में कंपनी की 27.00 प्रतिशत निर्गम पश्चात चुकता इक्विटी शेयर पूंजी शामिल है। पैंटोमैथ कैपिटल ऐडवाइजर्स प्रा. लि., कैटेगरी 1 मर्चेंट बैंकर, इस निर्गम का लीड मैनेजर है। इस निर्गम द्वारा जुटाई गई राशि का उपयोग व्यापक रूप से कार्यशील पूंजी जरूरतों और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों को पूरा करने में किया जायेगा। यह निर्गम 6 जनवरी 2017 को बंद होगा।

माहेश्वरी लॉजिस्टिक्स इस वित्तीय वर्ष में एनएसई इमर्ज पर आइपीओ लाने वाली 20वीं कंपनी होगी और इसे इस वित्त वर्ष में एनएसई इमर्ज पर आइपीओ के साथ सबसे बड़ी कंपनी बताया जा रहा है। कंपनी के निर्गम को पैंटोमैथ कैपिटल ऐडवाइजर्स प्राइवेट लिमिटेड, द्वारा मैनेज किया जा रहा है जिसने सर्वाधिक एसएमई आइपीओ मैनेज किये हैं और इसके अधिकतर आइपीओ ने शानदार लाभ प्राप्त किया

कंपनी ने निम्बाहेड़ा और जामनगर में वाहनों के लिए संपूर्ण मेंटेनेंस वर्कशॉप भी स्थापित की हैं। लॉजिस्टिक्स सेवाओं के अलावा, कंपनी ने नॉन-कोकिंग कोल के कारोबार में भी प्रवेश किया है। यह प्रत्यक्ष आयात अथवा अन्य आयातकों से हाई सीज खरीदारी के माध्यम से कोयले का भंडारण करती है।

हैप्पनींग्स द पार्टी स्टोर का शुभारंभ

उदयपुर। किसी भी प्रकार की पार्टी में उपयोग होने वाली एक्सेसरिज के लिए शहर के भूपालपुरा में 'हैप्पनींग्स द पार्टी स्टोर' का शुभारंभ हुआ है। उदयपुर संभाग के पहले शो रूम का उद्घाटन समाजसेवी हरीसिंह बाबेल एवं कंचनदेवी बाबेल ने फीता काटकर किया।

इस पर आयोजित प्रेसवार्ता में हैप्पनींग्स द पार्टी स्टोर की निदेशक चन्द्रा भंडारी एवं सहयोगी रजत भण्डारी ने बताया कि इस स्टोर में बच्चों का बर्थडे, बड़ों का बर्थडे, थीम बेस्ड बर्थडे, एनीवसरी, गोद भराई (बेबी शॉवर), बैचलरेट पार्टी, टूटू ड्रेसेज (प्रिंसेज थीम ड्रेसेज), रीटर्न गिफ्ट, पार्टी प्रोप्स, फोटो प्रोप्स, पार्टी डेकोरेशन, पार्टी मास्क, पार्टी के चश्मे, पार्टी बैण्ड्स, हैयर बैण्ड्स, सैश, मुकुट (क्राउन), टियारा, लगभग 80 प्रकार की कैण्डल्स एवं लेटेक्स, मैटेलिक (फोइल), एलईडी तथा हर थीम के आधार पर अलग-अलग प्रकार के बलून उपलब्ध हैं।

चन्द्रा भंडारी ने बताया कि बच्चों की बर्थडे के लिए करीबन 30 थीम उपलब्ध हैं जिसमें मुख्यत: मिक्की, मिनी, प्रिंसेज, फ्रोजन, कार, पाइरेट, मिनियन्स, सुपरमेन, बार्बी, सोकर (फुटबॉल), प्रथम बर्थडे लड़की-लड़का आदि हैं। बड़ों की पार्टी के लिए स्टोर में करीब 10-15 थीम हैं। इसमें कसीनों, डिस्को, रेट्रो, जंगल, हवाइन, पाइरेट आदि मुख्य हैं।

रजत भण्डारी ने बताया कि गोद भराई की रस्म जिसको बेबी शॉवर भी कहते हैं के लिए स्टोर में ऐक्सेसरीज एवं डेकोरेशन का सामान उपलब्ध है। बच्चे के जन्म उत्सव के लिए इट्स अ बॉय, इट्स अ गर्ल के गुब्बारे, कैण्डल्स, डेकोरेशन की सामग्री उपलब्ध हैं। बैचलरेट पार्टी के लिए स्टोर में बेहद खास और अनोखे प्रोडक्ट उपलब्ध हैं। इसी तरह टू बी ग्रूम के सैश, टाई, गोगल्स, ग्लासेज वीथ बो आदि उपलब्ध है जो कि इस स्टोर की खास विशेषता है।

भंडारी ने बताया कि स्टोर पर पार्टी प्रोप्स, फोटो प्रोप्स, प्ले कार्ड्स (कटआउट्स) की विशाल श्रृंखला उपलब्ध है जो किसी भी थीम पार्टी को यादगार बनाने में योगदान देती है। इसके अलावा डिस्को, रेट्रो, कसीनो, पाइरेट, हैप्पी बर्थडे, फ्लावर, क्राउन, सेल्फी, एलईडी आदि तरह के गोगल्स की विशाल कलेक्शन उपलब्ध है।

'जनसंख्या और प्रजनन स्वास्थ्य' से जुड़ी परियोजना रिपोर्ट जारी

उदयपुर। आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी ने 'कार्य निगरानी और जवाबदेही 2020' (परफॉर्मेंस मॉनिटरिंग एंड अकाउंटेबिलिटी-पीएमए 2020) को राजस्थान में लागू किया है। पीएमए 2020 में भारत सहित 10 देश शामिल हैं।

इस परियोजना को आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी के सहयोगी बने हैं- जॉन हॉपकिन्स ब्लूमबर्ग स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ एंड इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज के तहत संचालित बिल एंड मेलिंडा गेट्स इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन एंड रिप्रोडक्टिव हैल्थ और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय। इस परियोजना को बिल एंड मेलिंडा गेट्स इंस्टीट्यूट की तरफ से वित्तीय सहायता मिली है।

आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर और पीएमए 2020 के लिए राजस्थान के प्रिंसीपल इनवेस्टीगेटर डॉ. अनूप खन्ना ने बताया कि 'कार्य निगरानी और जवाबदेही 2020 के तहत अभिनव मोबाइल प्रौद्योगिकी का उपयोग किया गया, ताकि परिवार नियोजन और पानी, स्वच्छता और साफ-सफाई के बारे में लागत प्रभावी जनसंख्या आंकड़े एकत्र किए जा सकें। इस परियोजना का पहला चरण हाल ही पूरा किया गया है और वर्ष 2017 तक हर 6 महीने में तथा वर्ष 2018 तक साल में एक बार सूचनाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। पहले चरण में 4874 घरों और 297 स्वास्थ्य सुविधा केंद्रों को शामिल किया गया और जून-सितंबर के दौरान राज्य में प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में सर्वे किया गया।

परियोजना के निष्कर्षों के अनुसार 50 प्रतिशत से अधिक विवाहित महिलाएं आधुनिक गर्भनिरोधक तरीकों का इस्तेमाल कर रही हैं। वर्ष 2005-06 में 5 प्रतिशत विवाहित महिलाएं जन्म नियंत्रण की गोली का प्रयोग करती थीं, यह दर बढ़कर 2016 में 7 प्रतिशत तक पहुंची, जबकि पुरुष कंडोम का उपयोग 2005-06 में 6 प्रतिशत से बढ़कर 2016 में 10 प्रतिशत पर पहुंचा। डॉ. अनूप खन्ना ने बताया कि राजस्थान में विवाहित महिलाओं में से 15 प्रतिशत महिलाएं ऐसी हैं जो परिवार नियोजन के लिए तत्पर हैं और यह आंकड़ा 10 वर्ष पहले के आंकड़े से कुछ ही कम है।

आकर्षण का केन्द्र बनी वण्डर सीमेण्ट की फ्लॉवर प्रदर्शनी

उदयपुर। यूआईटी एवं प्रशासन उदयपुर के संयुक्त तत्वाधान में फतहसागर पाल पर आयोजित विभिन्न प्रजातियों के रंग-बिरंगे फूलों की प्रदर्शनी एवं फ्लॉवर शो में वण्डर सीमेण्ट लि. द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी आगंतुकों एवं सैलानियों के लिये मुख्य आकर्षण का केन्द्र बनी। फ्लॉवर शो के शुभारंभ के अवसर पर गृहमंत्री गुलाबचन्द्र कटारिया एवं यूआईटी चेयरमैन रवीन्द्र श्रीमाली ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इस दौरान गृहमंत्री ने वण्डर सीमेण्ट लि. के इस योगदान को औद्योगिक क्षेत्र के लिये एक प्रेरणादायक संदेश बताया। इस अवसर पर सांसद अर्जुनलाल मीणा, यूआईटी सचिव रामनिवास मेहता, महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, एनएलसीपी टीम लीडर बी.एल. कोठारी आदि उपस्थित थे।

वण्डर सीमेण्ट के उद्यान अधिकारी मोतीलाल पालीवाल ने बताया कि वण्डर सीमेण्ट लि. परियोजना के प्रारम्भ से ही पर्यावरण संरक्षण हेतु सजग एवं तत्पर रहा है। पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य करते हुए वण्डर सीमेण्ट लि. की परियोजना के 111 हैक्टर क्षेत्र में 1,95,229 पौधे तथा क्षेत्र के ग्रामीणों की आय में वृद्धि एवं बेहतर स्वास्थ्य हेतु 18 हैक्टर क्षेत्र में 18,000 फलदार पौधे लगवाये जा चुके हैं। इसके साथ ही वण्डर सीमेण्ट लि. द्वारा शहर में पुला सर्कल एवं सुखेर से प्रतापनगर बाईपास तक रोड़ मीडियन में सुन्दर पौधे लगाकर मार्ग का सौन्दर्यकरण किया गया हैं।

हिन्दुस्तान जिंक़ द्वारा 50 छात्रों को स्कॉलरशिप

उदयपुर। वेदान्ता समूह की कंपनी हिन्दुस्तान जिंक़ ने अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत हिन्दुस्तान जिंक़ के प्रधान कार्यालय स्थित ऑडिटोरियम में यशद सुमेधा स्कॉलरशिप चेक वितरण कार्यक्रम आयोजित किया। जिंक़ के मुख्य वित्तीय अधिकारी अभिताभ गुप्ता, मुख्य प्रचालन अधिकारी विकास शर्मा, चीफ कॉमर्शियल ऑफिसर रामाकृष्णन काशीनाथ, वाइस प्रेसीडेन्ड एचआर दिलीप पटनायक ने 50 विद्यार्थियों को यशद सुमेधा स्कॉलरशिप के चेक प्रदान किये।

जिंक़ की सीआर हेड श्रीमती नीलिमा खेतान ने बताया कि इस योजना के तहत उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले राजस्थान के योग्य विद्यार्थियों का चयन किया गया जिनके परिवार की वार्षिक आय एक लाख रुपये से कम है तथा छात्र द्वारा उच्च शिक्षा में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त करने किये गये हैं।

इनमें राजस्थान के अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद एवं उदयपुर जिलों की 12 छात्राएं भी सम्मिलित हैं। अब तक ऐसे छह हजार छात्र लाभान्वित हो चुके हैं।

मूत्राशय से निकाली 180 ग्राम वजनी पथरी

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने 11 वर्षीय बालिका का सफलतापूर्वक ऑपरेशन कर 180 ग्राम वजनी पथरी निकाली है।

पीआईएमएस के वाइस चैयरमैन आशीष अग्रवाल ने बताया कि सलूम्बर निवासी 11 वर्षीय बालिका भूलकी पुत्री शंकर काफी समय से पेट दर्द से परेशान थी। परिजन बालिका को गत 20 दिसम्बर को पीआईएमएस में लेकर आए जहां शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. विवेक पाराशर को दिखाया। सारी जाचें कराने के बाद मूत्राशय में पथरी का पता चला। इस पर अगले ही दिन पीडियाटिक सर्जन डॉ. प्रवीण झंवर व उनकी टीम ने बच्ची का ऑपरेशन कर 8.2 गुणा 3.8 सेमी लम्बी तथा 180 ग्राम वजनी पथरी सफलतापूर्वक निकाल ली। बच्ची अभी पूर्ण रूप से स्वस्थ है। शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. विवेक पाराशर के अनुसार अभी तक प्राप्त रिसर्च के आधार पर बच्चों के मूत्राशय (ब्लैडर यूरेनरी) ये निकाली गई यह सबसे बड़ी पथरियों में से एक है।

रसवंती कलाओं के .....

(पृष्ठ दो का शेष)

डॉ. सिंघवी दूरदृष्टा थे। उन्हें क्या करणीय है और क्या अकरणीय ; इसे वे समय का ठीक से आकलन कर अपने विवेकशील सोच और प्रज्ञा-बुद्धि का उपयोग करते थे। ऐसी जगह वे नितांत मौन तथा चुप ही बने रहने में सार समझते थे जहां उनकी कहनी बेअसर रहती और सुधार की कोई गुंजाइश नहीं रहती। कोई 25-30 वर्ष बाद, आज भी मुझे उनकी लिखी वे पंक्तियां चित्रपट की तरह दृष्टिगत होती हैं, लिखा था-

''हमारे मन में स्वैच्छिक संस्थाओं के लिए अपार आदर है लेकिन कभी-कभी किसी महान रचनाशील व्यक्ति की मृत्यु की रिक्तता में बौने लोग, जिन्हें मंद यश: प्रार्थी कहते हैं, घुस आते हैं और संकीर्ण अशालीन राजनीति चलती है।''

सामरजी की तरह सिंघवीजी भी असामयिक विदा हो गये। दोनों अपने-अपने क्षेत्र की विराट वैभववान विभूतियां थीं। भारतीय लोककला संस्कृति के पर्याय होने से पूर्व सामरजी अच्छे गद्यकाव्यकार, नाटककार तथा शिक्षक थे जबकि सिंघवीजी भारतीय विधि-विधान के लब्ध-प्रसिद्ध व्याख्याकार, विवेचक एवं पर्यालोचक होने के साथ-साथ अच्छे कवि, सुलेखक एवं सुविचारक थे। वे दोनों वे ही थे, दूसरे नहीं हो सकते।

पाबूजी पड़गाथा.....

(पृष्ठ पांच का शेष)

आस्था की पगडंडियों पर लोक का साम्राज्य अक्षुण्ण है। 'पाबूजी की पड़' का डॉ. भानावत ने भावानुवाद भी किया है जो अति आवश्यक जान पड़ता है क्योंकि इस अर्थ से पड़-गाथा ही नहीं, समग्र गायकी का परिवेश विस्तृत परिदृश्य को दूर-दूर तक विस्तार देता है। यह लोकसाहित्य के अध्येताओं के लिए आवश्यक भी है क्योंकि यह संभावना और आशंका हमेशा से रहती आई है कि अनुवाद के अभाव में लोकरचनाओं का अनर्थ ही होता है। कृति में उस काल के परिवेश के तादात्म्य को लिए ही अर्थ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया और ससंदर्भ विवेचना भी की गई है।

इस कृति की महत्वपूर्ण विशेषता इसकी भूमिका भी है। भूमिका में विद्वान अध्येता ने पड़ की परम्परा पर प्रकाश डाला है तथा कहा है कि राजस्थान की धरती ने ही पट्ट चित्रांकन शैली को जन्म दिया। वस्त्र की पड़दों पर चित्रण ने इसे पड़ नाम दिया है। यहां देवनारायण की पहली पड़ बनी। बाद में शाहपुरा-पुर-भीलवाड़ा के जोशी छींपों ने रामदला, कृष्णदला, भैंसासुर और रामदेव सहित पाबूजी की पड़ें भी तैयार कीं। भोपों ने इन्हीं पड़ चित्रावलियों के आधार पर अपनी गायकी का प्रवर्तन किया। पाबूजी प्रमुख पांच पीरों में से एक हैं। कहावत भी चली आ रही है-

पाबू हरबू रामदे मांगलिया मेहा।
पांचू पीर पधारजो गोगाजी जेहा।।

पाबूजी का काल डॉ. भानावत वि.सं. 1313 से 1337 मानते हैं। उन्होंने पाबूजी के जन्म के संबंध में कई किंवदंतियां भी प्रस्तुत की हैं तथा उनके मंड (मंदिरों) से जुड़ी आस्थाओं को भी अभिव्यक्ति दी है। पड़ की निर्माण कला, पूजन-प्रथा, गेय-परिपाटी, सहजेना व्याव्य-संस्कार सहित संगत वाद्यों-रावण हत्था, माट आदि का भी यथास्थान, पर्यास, प्रसंगोचित परिचय दिया है। साथ ही गेय योग्य विशेषताओं के साथ स्वरलिपि देने का प्रयास भी किया है।

समग्रतया 'पाबूजी की पड़' कृति पठनीय तो है ही, राजस्थान की सांस्कृतिक परम्पराओं का जीवंत दस्तावेज होने से सभी के लिए संग्रहणीय भी है। कुल 131 पृष्ठों की छपाई आकर्षक, कीमत कम तथा सुन्दर मुखपृष्ठ सभी को लुभाते हैं।

मेरा भी कोई तो दर्द है

तुम दिन भर प्रसन्न रहे, एक खोटा सिक्का चला दिया।
उसने बीड़ी जलाई, मेरा दम घुट गया।
तुम्हारे कुछ नहीं हुआ, उसका घर जल गया।
चलने और चलाने में फर्क होता है
किसे समझायें?
नोजवान चल रहा है, कुम्हार का चाक, चलाया जा रहा है।
बहुत सारे प्रश्न अनुत्तरित रहेंगे
खोद-खोद कर मत पूछो।
जरा सा खड्डा देखा, नन्हा सा बीज डाल दिया
कमाल देखो!
सृष्टि ऐसे ही बनती है।
तुम ना समझ हो, वाकर चलाकर चल रहे हो
पर यह समझना होगा कि चलना सीधा होता है
वह टेढ़ामेढ़ा चलता है।
समझ कैसी भी हो उसका फर्क तो होता ही है।
कविता सभी के पास है पर सभी कवि नहीं हैं
और जो सबको हंसाता है
क्या वह उदास नहीं है?
बंदर भालू अब नहीं आते हैं अपना पेट दिखाने
दूसरे बहुत हो गये हैं बहुत कुछ दिखाने वाले।
कवि वह भी है जो सबसे मंहगा हो गया है
और वह भी जिसे कोई नहीं मानता।
नाम चलता है असली हो या नकली
गोबर का कीड़ा गोबर में ही पहचान देता है
सिक्का किसका होता है, ढालता कोई है।
कौन जान पाया सच क्या है।
दावेदारी से कोई किसी का नहीं हो जाता
मां से पूछो कि बच्चा किसका है
बाप क्या जानेगा?
ठीक है, जो चलन में नहीं है
वह भी मूल्यवान है पर गुंजाइश रखो।
सरिता सब जगह बह रही है
पहाड़ों में, पत्तों में, उर्मियों में, आंखों में।
उस अनजान के लिए
न जाने कब से कितने भटक गये
खोजते-खोजते ही उसे भूल गये।
यही आनंद है, मकरंद है
मगर तुमने तो शकरकंद का स्वाद भी नहीं चखा
जिंदगी भर चरभर खेलते रहे और उसी को रटते रहे
चर भर, चर भर।
इससे तो वह तोता ही ठीक है जो कुछ नहीं जानता
मगर घर आये को आओसा पधारोसा कहकर
प्रसन्न कर देता है।
तोता नहीं है उस आये जाये को बुलाने वाला
मगर जिसकी खा रहा है उसकी बजा रहा है
हम कुछ नहीं बजाते हैं।
उड़ाने को धज्जियां उड़ाते हैं।
यह हमने समझ लिया है कि युगधारा ही ऐसी है
मैं पर्दा हिला रहा हूं
और तुम समझ रहे हो कोई पल्लू हिला रहा है
धड़कन तुम्हारी तेज हो जाती है, मेरी तो वैसी की वैसी है।
बैल भेटी न भी दे तो भी बैल है।
दूध-दूध में फर्क होता है
मां के दूध में कभी मिश्री नहीं घोली जाती।
प्रेम मैंने भी किया है किन्तु कभी अफसोस नहीं हुआ
तिराहे पर खड़ा जो बेबस पागल दिखाई दे रहा है
वह प्रेम में पगला गया है, अग जग से बेखबर।
कोकिल का गला खुल गया है, बसंत आ गया है
अबे कौए !
तू कांव-कांव ही करता रहेगा क्या?
मेरे दादा-परदादा जो कुछ कहते रहे
बदलाव पा रहा हूं मैं।
तुलसी भटकते रहे राम के लिए
सूर ने आंखें फोड़ीं कृष्ण के लिए
मीरां दर्द दीवानी हो गई आंसुओं के रास्ते।
मेरा भी कोई तो दर्द है किसको बताऊं?
मैं हिन्दी जानता हूं, वह अंगरेजी में बड़बड़ाता है।

'शब्द रंजन' का इस वर्ष का यह आखिरी अंक

इस अंक के साथ 'शब्द रंजन' प्रकाशन का एक वर्ष समाप्त हो रहा है। पाठकों, शुभेच्छुओं, रचनाधर्मियों तथा विज्ञापनदाताओं ने जो सौहार्द, सहयोग, स्नेह सम्बल दिया वह हमारे लिए स्मरणीय रहेगा। अगेल अंक के लिए आपके सहयोग की उम्मीद है।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधानक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

कान्यो मान्यो

सूंप्यौ धन सांपई नी सूंघै

कान्यो आज एक गामड़ा में पुरानी लुगायां की मैफिल में पोंचग्यो। वठै पांच-पांच पीढ़ी पुरानी बातां चालरी। घर का पितरां ने याद करे ज्यूं वी लुगायां आपणा गाम रा गया गुजर्‌या लोगां ने चिंतारर्‌या हा। ब्याव शादियां में विदा री टेम लाडू पुड़ी री कापड़ा में चिंतारणी भेजता। जी ब्याव मांय नी आया वां ने चिंतार्‌या, याद कीधा ने ब्याव राजीखुशी संपूरण वेग्यो, अंडी खबर चिंतारणी आपूंआप दे देती। वी लुगायां भणीपढ़ी नी। ठेठ गामड़ा री, ओरण पैरण, बोली-चाली, करणी-कथनी, चाल-चलाबो, रैणी-सैणी सब में गाम री गंध। आपसी वातां मांय ठसका देवती कैवतां मांय समझे-समझावे।

कान्यो सब सुणतो र्‌यो। वने मजो आईग्यो। लुगायां मांय एक सबसूं मोटी बोली के दार्‌यां वो सतजुग आपां देख्यो है जदी कोई आपरो भरोसो ने विसवास कर आपणे धन-गेणा गांठा री पोटली संभलाय जावता कै म्हां तीरथां जाइर्‌या हां, कै संतां री ठौड़ जाइर्‌यां हां, के कठै मोत मरण, ब्याव शादी, सग्गाजी कनै जा रिया हां, पोटली ने थाणे पां राखजो। सबूत री कोई लिखापड़ी नीं वेती। कोई सैलाणी निसाणी नी वेती। पोटली में कई है, पतो नी रै तो पण वांरे लोट्‌या पछै पोटली वांने संभलाय देता। कोई तीजो कान नी जाणतो।

अर अबै। दूजी बोली- राम-राम, लोगां मांय सत नी र्‌यो। तीजी बोली- कलजुग है। रांड रंडापो काढणो चावै पण रंडवा काढ़वा नी दै। कोई विसवास काबल नीं। अखबारां में सुणां कै धरती माथै धरम नीं। आकाश माथै शरम नीं। आदमी आंधो व्यो परो। पैली सूंप्यौ धन सांपई नी सूंघतो अबै धन सैती सांप सरकायले। चौथी मसको मेल्यो, दारयां पैली सांप फुफकार मेलतो, सबका लींडा पड़वा जाता। अबै लोग सांप सूं ई नी डरपै। पांचवी वात काट बोली- सब सुणी कै सांप रौ जैर आदम्यां नै चढ़ै पण अबै सेंसार री हवा उलटबांस वेवाऊं आदमी रो जैर सांप नै चढ़ै।

मान्यो छानो मानो बैठ कान्या रो बखाण सुणतो र्‌यो। एक सबद नी बोल्यो। बोलतो तो वंडी लाख टका री वात में फोड़ो पड़ जावतो।

शिल्पग्राम उत्सव का रंगारंग समापन

17 राज्यों के 600 कलाकारों और 800 शिल्पकारों की रही भागीदारी

उदयपुर। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की ओर से आयोजित दस दिवसीय 'शिल्पग्राम उत्सव' का समापन शुक्रवार को हुआ। आखिरी दिन 'झंकार' में दो दर्जन से ज्यादा लोकवाद्यों का प्रदर्शन किया गया। उत्सव में भारत के 17 राज्यों के 600 कलाकारों व 800 शिल्पकारों ने भाग लिया। विकास आयुक्त हस्त शिल्प नई दिल्ली, विकास आयुक्त हथकरघा नई दिल्ली, नेशनल जूट बोर्ड तथा क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के सौजन्य से आयोजित इस उत्सव में 'सांस्कृतिक प्रश्नोत्तरी', 'हिवड़ा री हूक' जैसे आयोजनों में लोगों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।

कार्यक्रम की शुरूआत मुक्ताकाशी रंगमंच 'कलांगन' पर राजस्थान के लोकवाद्य मशक वादन से हुई। इसके बाद गुजरात के कलाकारों ने राठवा नृत्य प्रदर्शित किया। रंगमंच पर उत्सव की आखिरी शाम का प्रमुख आकर्षण 'झंकार' रहा जिसमें दो दर्जन से ज्यादा लोकवाद्यों की एक साथ गूंज ने शिल्पग्राम आये दर्शकों की शाम स्मरणीय शाम बना दी। केन्द्र निदेशक फुरकान खान तथा कार्यक्रम अधिकारी तनेराजसिंह सोढ़ा द्वारा परिकल्पित 'झंकार' में मुगरवान, ताशा, मसीण्डो, शंख, धूम धड़ाका, पुंग, ढोल, खड़ताल, भपंग, ढोलक, नाल, निसान, मोरचंग, तार शहनाई, तविल, पम्बी, मृदंगम, वॉयलिन, कंसाले, चौतारा, संबळ, तुनतुना आदि वाद्य यंत्रों ने अपनी स्वर लहरियां बिखेरी। इसके बाद शनैः शनैः वादन की गति ने जोर पकड़ा तो दर्शक भी झूम उठे।

कार्यक्रम में ऑडीशा का गोटीपुवा नृत्य दर्शनीय प्रस्तुति बना वहीं सम्बलपुरी में नर्तकों ने अपने नृत्य से समां बांध दिया। मांगणियार गायकों ने लोकप्रिय नींबूड़ी गीत सुना कर दाद बटोरी तो भपंगवादक उमर फारूख ने प्रसिद्ध गीत 'टर्र' से लोगों को लुभाया। गुजरात के सिद्धि नर्तकों की प्रस्तुति को निहारने के लिये लोग आखिर तक जमे रहे। सिद्धि कलाकारों ने वादन पर थिरकते हुए संगत की तथा सिर से नारियल फोड़ने का करिश्मा दिखाया तो दर्शकों ने तालियों से उनका अभिवादन किया।

इससे पूर्व दोपहर को मेले में भारी संख्या में लोग शिल्पग्राम पहुंचे। शाम को हाट बाजार पैर रखने की जगह नहीं थी। लोगों ने हाट बाजार में मिट्‌टी की मूर्तियां, चमड़े के लैम्प शेड्स, बांस की सीकों से बने मुड्डे, लकड़ी की फ्रेम्स, टेबल-कुर्सी, विभिन्न प्रकार के गुलदस्ते, चाइना क्ले के बने कॉफी मग, टी पॉट्स, बेम्बू के बने आईने, कॉटन व रेशमी वस्त्र, साड़ियां, चिकनकारी के कुर्ते, राजपूती परिधान व सलवार सूट, लाख की चूड़ियां, इयरिंग्स, बैंगल्स, हैण्डमेड पेपर, पुस्तके आदि की जमकर खरीददारी की।

डॉ. धींग को आचार्य हस्ती करुणा वक्ता अवार्ड

27 दिसम्बर को चैन्नई में वहां के अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक डॉ. दिलीप धींग को 'आचार्य हस्ती करुणा वक्ता अवार्ड' प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायाधीश एम. जयचंद्रन के हाथों डॉ. धींग को 25 हजार की सम्मान-राशि, प्रशस्ति-पत्र और स्मृति-चिह्न प्रदान किय गया।

सुराणा एंड सुराणा इंटरनेशनल अटोर्नीज के पी.एस. सुराणा ने कहा कि डॉ. धींग एक वक्ता, अधिवक्ता, श्रेष्ठ कवि, लोकप्रिय लेखक, कुशल संपादक और समर्पित कार्यकर्ता हैं। इस अवसर पर वीरायतन की आचार्य चंदना एवं भगवान महावीर कैंसर चिकित्सालय, जयपुर के संचालक नवरतन कोठारी दंपत्ति भी 'आचार्य हस्ती करुणा-रत्न अवार्ड' से नवाजे गए। आचार्य चंदना की अनुपस्थिति में साध्वी संघमित्रा ने सम्मान प्राप्त किया। अवार्ड समिति के चेयरमैन प्रो. पी.एम. गोपालकृष्ण ने अवार्ड चयन प्रक्रिया की जानकारी दी।

प्रदर्शनी में पहली बार आये कश्मीरी उत्पाद

उदयपुर। राजस्थान खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड व जिला उद्योग केन्द्र उदयपुर के तत्वावधान में भण्डारी दर्शक मण्डप में आयोजित 15 दिवसीय खादी एवं ग्रामोद्योग प्रदर्शनी में पहली बार कश्मीरी उत्पाद में लेदर एवं ड्रायफ्रूट लोगों द्वार पसंद किये गये। राजस्थान खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष भानू कुमार शास्त्री ने प्रेसवार्ता में बताया कि सरकार खादी उत्पादों को बढ़ावा देने, हस्तकरघा एवं कामगारों को रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 28 वर्षो से उदयपुर में इस प्रकार की प्रदर्शनी का आयोजन कर रही है।

राजस्थान खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड के सदस्य भरत भानूसिंह देवड़ा ने बताया कि पहली बार इस प्रदर्शनी में कश्मीरी उत्पादों ने उपभोक्ताओं का ध्यान अपनी और आकर्षित किया है। प्रदर्शनी में सूती खादी के उत्पाद कोटिंग एवं शर्टिंग, दरी, जाजम, सलवार सूट, टेबल कवर, जैसलमेर, बाड़मेर, आमेट, देवगढ़ के कम्बल, उदयपुर संभाग के उत्पादित मेरीनों, देशी कम्बल, जेन्ट्स, लेडिज शॉल, कार्डिगन, वूलन हॉजरी शॉलें, रेशमी एवं सिल्क खादी के उत्पादों रीड सिल्क, टसर पेपर सिल्क, मूंगा सिल्क, सिल्क की साड़ियां प्रिन्ट एवं जरी बॉर्डर, रेशमी बॉर्डर, प्लेन सिल्क उत्पादों ने जनता को लुभाया।

जिला उद्योग के संभाग अधिकारी खादी एवं प्रदर्शनी संयोजक प्रकाशचन्द्र गौड़ ने बताया कि प्रदर्शनी में स्टील के फर्नीचर, दक्षिण भारत के जूट के पायदान, महिला मण्डल के उत्पादों में अचार, मसालें, पापड़ा, नमकीन, साबुन, शैम्पू, अगरबत्ती, मोलेला की मिट्‌टी के खिलौने, बांसवाड़ा के तीर कमान को भी खूब पसंद किया। तेलघाणी इकाइयों द्वारा तेल निकालने का लाइव प्रदर्शन भी सराहनीय रहा।

जोधपुर में 'शहजादी फीरोजा' का लोकार्पण

हर भाषा को अनुवाद की जरूरत रहती है। अनुवाद के माध्यम से ही भाषा की ताकत का अहसास होता है और वह अपना भेद खोलती है। ये विचार केन्द्रीय साहित्य अकादेमी में राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अर्जुनदेव चारण ने व्यक्त किये। अवसर था पुरूषोत्तम पोमल रचित एवं राकेश रामावत द्वारा हिंदी से राजस्थानी में अनूदित उपन्यास 'शहजादी फीरोजा' के लोकार्पण का। मुख्य अतिथि चारण ने कहा कि इतिहास में तिथि एवं तथ्य देखे जाते हैं जबकि उपन्यास में जीवन। हमारी पौराणिक परंपरा को तिथि और तथ्यों जैसे बिन्दुओं के आधार पर ख़ारिज नहीं किया जा सकता। इतिहास जहाँ मौन हो जाता है रचनाकार वहीं मुखर हो उठता है।

समारोह के अध्यक्ष प्रो. जहूर खां मेहर ने कहा कि अनुवाद कर्म सर्जन-कर्म से मुश्किल होता है। इतिहास की पृष्ठभूमि पर जो रचनाएँ रची जाती हैं, वे गैर इतिहासकार बेहतर रच पाते हैं। उपन्यास में वर्णित घटनाएँ और पात्र ऐतिहासिक हैं किन्तु उपन्यास इन घटनाओं तक सीमित नहीं है। डॉ. मदन सैनी ने पत्र वाचन करते हुए कहा कि पुरूषोत्तम पोमल के इस हिंदी उपन्यास का अनुवाद राकेश रामावत ने सफलतापूर्वक किया है। शहजादी फीरोजा के राजकुंवर वीरमदेव से प्रेम की यह कथा दो संस्कृतियों के मिलाप की अद्‌भुत कथा है। डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने शहजादी फीरोजा को वृहद् लोक उपन्यास बताया जो भाषा, भाव और शैली की दृष्टि से अद्वितीय और अनूठा बन पड़ा है।

'कथा संस्थान' के मीठेश निर्मोही ने कहा कि भूमंडलीकरण के इस दौर में जब भाषा और संस्कृति की विविधता को बोझ समझा जा रहा है और सात अरब विश्वजन की सात हज़ार मातृ भाषाओं में से प्रतिदिन एक भाषा मर रही है, ऐसे में परस्पर भाषाई अनुवाद के जरिये ही हम भाषा विशेष के साहित्य को बचाए रख सकते हैं। मारवाड़ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रचा गया शहजादी फीरोजा एक ऐसा उपन्यास है जिसमें एक ओर कान्हड़ देव और अल्लाउद्दीन कालीन राजनैतिक, सामाजिक और सास्कृतिक परिवेश को तत्कालीन जीवन संघर्षों और दूसरी तरफ कान्हड़ देव के राजकुंवर वीरम देव और अल्लाउद्दीन खिलजी की शहजादी फीरोजा के अदैहिक प्रेम कथा-कथन देने का श्लाघनीय प्रयत्न प्रशंसनीय है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।